04 - बिहार चुनाव में उप्र की साख दांव पर

05 - मधुमेह की रफ्तार दोगुनी, हर दसवां भारतीय बीमार

A Daily News Magazine

इंदौर

बुधवार, 12 नवम्बर, 2025

06 - ठंड से आक्रामक हो रहे कुत्ते, आवारा कुत्तों की वजह से लोगों में भय

07 - एमएलबी स्कूल में जेईई तथा नीट की निःशुल्क कोचिंग की कार्यशाला..

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 49, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

बिहार में नीतीश केंद्रित चुनाव पर सबकी निगाह

उमेश चतुर्वेदी

बिहार इन दिनों राजनीति की दुनिया के लिए हॉट केक बना हुआ है। ढाई दशक बाद राज्य में बंपर मतदान हुआ है। भारी मतदान को लेकर मान्यता रही है कि अक्सर यह सत्ता विरोधी लहर का प्रतीक होती है। इस लिहाज से तेजस्वी यादव की अगुवाई वाला विरोधी महागठबंधन और उसके समर्थक बौद्धिकों की बांछें खिल उठी हैं। उनकी उम्मीदें बढ़ गई हैं कि मोदी के हरावल दस्ते को बिहार ठीक दस साल पहले की तरह इस बार भी बांध लेगा। लेकिन बंपर मतदान की प्रचलित अवधारणा के अपवाद 2010 और 2016 के पश्चिम बंगाल चुनाव हैं। जिनमें सत्ताधारी नीतीश और ममता और बड़े बहुमत से सत्ता में वापस लौटे थे। बिहार में इसकी ही संभावना ज्यादा है। अगर ऐसा ही होता है तो तय मानिए कि बिहार भी गुजरात और मध्य प्रदेश की तरह बीजेपी और एनडीए के लिए मजबूत गढ़ के रूप में उभर कर सामने आएगा।

बिहार के चुनाव नतीजों पर केंद्र सरकार ही नहीं, मोदी की अगुवाई को समर्थन दे रही तेलुगू देशम पार्टी की अगुवाई वाली आंध्र प्रदेश की सरकार का भी भविष्य टिका है। अगर बिहार में एनडीए की भारी जीत होती है तो साफ है कि केंद्र में मोदी सरकार और मजबूत होगी। इसके साथ ही सरकार की उम्र पर कोई सवाल नहीं उठेगा। केंद्र की बीजेपी की अगुवाई वाली सरकार को एक तरफ से नीतीश के नेतृत्व वाला जनता दल यू थामे है तो दूसरी तरफ से एन चंद्रबाबू नायडू का तेलुगू देशम। तेलुगू देशम और एन चंद्रबाबू की राजनीति स्पष्ट है। उनकी सारी कामयाबियां और कार्य व्यापार केंद्रीय सत्ता के सहयोग से चलता है। समर्थन देने की कीमत वे वसूलना अच्छी तरह जानते हैं। अतीत में उन्होंने पहले संयुक्त मोर्चा की सरकार से कीमत वसूली, फिर वाजपेयी सरकार से भी कुछ वैसा ही नाता रखा। इस मामले में वे अनुभवी हैं। इसी अनुभव और कीमत वसूली अभियान के चलते वे राज्य को केंद्र से भरपूर आर्थिक और दूसरी मदद वसूलते रहे। उनकी साइबराबाद की कल्पना हो या फिर राज्य में विकास की बयार बहाने का माद्दा। उन्होंने उन्हें केंद्र के सहयोग से ही पूरा किया है।

बिहार में एनडीए की जीत पर एनडीए और जनता दल यू का भविष्य भी टिका है। अगर बिहार में जीत मिलती है तो तय है कि नीतीश और बड़े कद के साथ उभरेंगे। अगर हार होती है तो फिलहाल मोदी सरकार से अलग होने का सवाल नहीं उठेगा। लेकिन देर-सवेर जनता दल यू मोदी सरकार से दूर होने के बहाने तलाशने लगेगा। उस हालत में जनता दल में ही मानने वालों की कमी नहीं रहेगी कि उसकी हार बीजेपी के ही चलते हुई है। इसकी वजह से नीतीश पर एनडीए से हटने का अंदरूनी दबाव बढ़ सकता है। लेकिन उसमें देर होगी। लेकिन खटपट की आशंका बढ़ती जाएगी।

बिहार में विधानसभा चुनाव के आंकड़ों का निष्कर्ष तो बाद में आएगा। लेकिन पहले दौर के जिस तरह के नजारे दिखे हैं, उसमें लगा कि महिलाओं ने बढ़-चढ़कर वोटिंग में हिस्सेदारी की है। जिस तरह मतदान केंद्र पर महिलाओं की लाइनें लगी थीं, उससे लगता है कि बिहार का चुनावी परिदृश्य यह इतिहास फिर से दोहराने जा रहा है। इसकी वजह माना जा रहा है, नीतीश सरकार द्वारा ऐन चुनावों से ठीक पहले महिलाओं को दस-दस हजार रूपए की आर्थिक सहायता देना। वैसे बिहार में विधवाओं को 11 सौ रूपए का मासिक पेंशन भी मिलती है। बिहार जैसे लोक अभावग्रस्त राज्य में यह रकम बड़ी सहारा बनती है। इसलिए महिलाएं इस बार खुलेआम नीतीश सरकार के पक्ष में दिखीं।

बिहार वैसे तो जातिवादी राजनीति के लिए बदनाम रहा है। लेकिन उसे बदनाम करने वाले राज्य भी जातीय गोलबंदी की राजनीति से अछूते नहीं हैं। हर राज्य में अपने-अपने जातीय समूह हैं और उनकी अपनी गोलबंदी है। हर राजनीतिक दल इन जातीय समूहों का टिकट वितरण में ध्यान रखता रहा है। बहरहाल इस बार जातीय गोलबंदी और मुद्दों से इतर बिहार के चुनाव को ले जाने की कोशिश चुनाव रणनीतिकार और सलाहकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर ने की। लेकिन बिहार का चुनाव अपने पारंपरिक जातीय गोलबंदी और धार्मिक ध्रुवीकरण पर केंद्रित होता चला गया। है।

इस चुनाव में भी बिहार के सीमांचल के जिलों में असदुद्दीन ओबैसी की अपनी ताकत दिखाने में सफल रहेगी। इस बार के चुनाव में चिराग पासवान एनडीए के साथ हैं। चिराग इस बार नीतीश की अगुआई का जाप कर रहे हैं। उनके 29 प्रत्याशी मैदान में हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक पहले कुछ राजनीतिक प्रेक्षकों को लग रहा था कि महागठबंधन इस बार सत्ता नीतीश से छीन सकता है। अगस्त में चली प्रदेशव्यापी वोटर अधिकार यात्रा में उमड़ी भीड़ के बाद इस धारणा को मजबूती मिली थी। राहुल गांधी को पहली बार किसी गैर कांग्रेसी नेता ने इसी यात्रा में अपना प्रधानमंत्री उम्मीदवार घोषित किया था। वे नेता तेजस्वी रहे। लेकिन आखिर में जिस तरह सीट बंटवारे को लेकर कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल और मुकेश सहनी की विकासशील इन्सान पार्टी के बीच जिस तरह खींचतान हुई, जिस तरह दरभंगा की गौराबौड़ाम सीट से मुकेश सहनी को अपने भाई संतोष साहनी की उम्मीदवारी राजद उम्मीदवार के पक्ष में वापस लेना पड़ा, उससे महागठबंधन की फजीहत ही हुई है।

महागठबंधन में करीब एक दर्जन सीटों पर जारी दोस्ताना लड़ाई से आखिरकार उसे ही नुकसान होता दिख रहा है। इस चुनाव ने साबित किया है कि बाहुबली और बिहार का चुनाव एक-दूसरे के पूरक हैं।

बिहार में अगर सत्ता बदलती है तो तय है कि उसकी सूत्रधार महिलाएं होंगी और अगर सत्ता बचती है तो उसका भी दारोमदार महिलाओं पर ही होगा। तब माना जाएगा कि महिलाओं को आर्थिक सहायता, शराबबंदी और महिला सुरक्षा का मुद्दा कामयाब रहा। वैसे भारतीय मतदाता भावुक भी है। उसे पता है कि नीतीश की यह तकरीबन आखिरी चुनावी पारी है। इस वजह से भी मतदाताओं के एक बड़े वर्ग का उन्हें समर्थन मिल सकता है। हमारी संस्कृति में उदारता पूर्वक शानदार विदाई देने की परंपरा है। अगर नीतीश की अगुवाई में एनडीए जीतता है तो उसकी एक बड़ी वजह यह भी मानी जाएगी। इस चुनाव की एक और खासियत है कि नीतीश ही इसके केंद्र में हैं। विपक्ष भी उनकी ही बात कर रहा है और बीजेपी भी। जनता दल यू को तो करना ही है। विपक्ष बार-बार यह कहता है कि नतीजों के बाद बीजेपी नीतीश से सत्ता छीन लेगी। जबकि बीजेपी ही नहीं, प्रधानमंत्री मोदी भी बार-बार नीतीश की अगुआई में बिहार के चुनाव की बात करते रहे हैं।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

एमपी की लाड़ली बहनों को आज मिलेंगे 1500 रुपए

सिवनी में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में सीएम खाते में डालेंगे पैसा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन और नेतृत्व में प्रदेश में नारी सशक्तिकरण का अभियान द्रुतगति जारी है। प्रदेश की लाड़ली बहनों से मुख्यमंत्री डॉ. यादव का किया हुआ वादा 12 नवम्बर 2025 को पूरा होने जा रहा है। एक करोड़ 26 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को सिवनी में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में बड़ी हुई राशि उनके खाते में अंतरित की जायेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रत्येक लाड़ली बहना के खाते में 1500 रूपये देने की शुरूआत करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की इस पहल पर प्रदेश की लाड़ली बहनों ने अपने भैया मोहन के प्रति आभार जताते हुए कहा है कि वे ठीक उसी प्रकार हमारा ध्यान रख रहे हैं, जैसे भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बहन

सुभद्रा का ध्यान रखा था। प्रदेश की महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में चल रही मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। जून 2023 से अक्टूबर 2025 तक योजना के अंतर्गत लाभार्थी महिलाओं को कुल 29 किस्तों में नियमित आर्थिक सहायता राशि का अंतरण किया गया है। रक्षा बंधन पर अगस्त 2023, अगस्त 2024 और अगस्त 2025 में लाभार्थी महिलाओं को 250 रूपये की विशेष सहायता राशि तीन बार प्रदान की गई। इस प्रकार योजना के आरंभ से अब तक 44,917.92 करोड़ रूपये की राशि का सीधा अंतरण लाभार्थी महिलाओं के खातों में किया जा चुका है। प्रदेश सरकार द्वारा संचालित महत्वाकांक्षी योजना ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। योजना से महिलाएं न केवल अपनी छोटी-छोटी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा कर रही हैं, बल्कि बैंकिंग में प्रणाली से भी सीधे जुड़ रही हैं। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में प्रदेशभर में महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण का सीधा लाभ मिल रहा है।

सीएम आज करेंगे नेशनल कॉन्क्लेव का शुभारंभ

राज्यपाल पटेल समापन सत्र के होंगे मुख्य अतिथि, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, प्रशासन पर विशेषज्ञ की चर्चा

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जनजाति कार्य मंत्रालय, भारत सरकार और मध्यप्रदेश जनजाति कार्य विभाग द्वारा संयुक्त रूप से जनजाति कल्याण के लिए कार्य कर रहे अशासकीय संगठनों की नेशनल कॉन्क्लेव का भोपाल में 12 नवंबर को शुभारंभ करेंगे। राज्यपाल मंगूभाई पटेल नेशनल कॉन्क्लेव के समापन सत्र के मुख्य अतिथि होंगे। जनजाति कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह मुख्य अतिथि होंगे। कॉन्क्लेव का आयोजन कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में किया गया है। इसमें देश के 500 से ज्यादा विषय विशेषज्ञ जनजातीय कल्याण से जुड़े हुए विषयों पर चर्चा करेंगे। नेशनल कॉन्क्लेव में विषय विशेषज्ञ स्वैच्छिक संस्थाओं एवं प्रयासों के माध्यम से जनजातीय समुदाय के सशक्तिकरण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे। जनजाति समुदाय की शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, वन अधिकार, शासन, प्रशासन से जुड़े मुद्दों पर विशेषज्ञ अपने-अपने विचार रखेंगे। जनजातीय समुदाय की शिक्षा और सशक्तिकरण में शैक्षिक संगठनों की भूमिका, चुनौतियां एवं मुद्दे, वर्तमान में शिक्षा का स्तर, समग्र शिक्षा में शैक्षिक संगठनों की भूमिका पर विशेष चर्चा होगी। जनजातीय समुदाय की महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण से जुड़ी समस्याओं और चुनौतियां, टीकाकरण एवं अन्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमो की पहुंच बढ़ाने, टेली मेडिसिन, एमहेल्थ जैसे आधुनिक हस्तक्षेप से स्वास्थ्य सेवा बढ़ाने में अशासकीय संगठनों की भूमिका पर विचार होगा। कॉन्क्लेव में जनजातीय अर्थव्यवस्था से जुड़ी समस्याओं, और आजीविका बढ़ाने, जनजातीय युवाओं में उद्यमिता बढ़ाने, आजीविका के नए अवसर, स्वसहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक उद्यमिता को बढ़ावा देने जैसे विषयों पर विचार विमर्श होगा। इसमें स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका तय की जाएगी, साथ ही वन अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन में आ रही कठिनाइयों पर भी चर्चा होगी।

विद्यार्थियों को मिलेगी एव्हीजीसी लैब की सौगात

8 शासकीय महाविद्यालयों में स्थापित होंगी अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं

भोपाल। प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को परंपरागत कोर्स के साथ-साथ रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा विभाग द्वारा एक अभिनव पहल की जा रही है। इसमें भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, धार, जबलपुर और रतलाम

जिलों के 8 महाविद्यालयों में एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, ग्राफिक्स, कॉमिक्स एंड एक्सटेंडेड रियलिटी (ए. व्ही.जी.सी) लैब स्थापित की जा रही हैं। इनमें से 4 प्रयोगशालाएं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से स्थापित की जा रही हैं। जबकि 4 लैब उच्च शिक्षा विभाग द्वारा बनाई जाएगी। अपर मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा विभाग श्री अनुपम राजन ने बताया कि ये लैब उन शासकीय महाविद्यालयों में स्थापित की जा रही हैं, जहां फाइन आर्ट्स विषय का अध्ययन संचालित है। ए. व्ही.जी.सी. लैब के माध्यम से विद्यार्थियों को एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, ग्राफिक डिजाइनिंग और एक्सटेंडेड रियलिटी जैसे आधुनिक विषयों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे उन्हें रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। प्राथमिक तौर पर पहले इसे पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में प्रदेश के 8 महाविद्यालयों में प्रारंभ किया जा रहा है।

प्रदेश के 8 शासकीय महाविद्यालयों में ए. व्ही.जी.सी स्थापित करने में लगभग 7 करोड़ रुपये से अधिक का खर्च आएगा।

शरद की सुबह

कभी रात को भी
देखना
कितनी भी अंधेरी हो
पर होती है मुलायम
जैसे काली मुलायम
चादर हो

वह दिनभर की थकान
दूर कर देती है
लगता है जैसे
माँ की गोदी में
सोये हों

रात के चांद-तारे
तुम्हारी आँखों में
चमकते रहते हैं
और उन्हें ज्योतित
करते रहते हैं

रात तुम्हारी आँखों को
सुकून देती है
और सपनों के
सुन्दर लोक में
ले जाती है

इस रात की
वंदना करो
यह तुम्हारे जीवन को
नया जीवन देती है।

- दुर्गाप्रसाद झाला

बिहार में एक बार फिर एनडीए की बन रही सरकार

महागठबंधन को 73-91, चिराग की पार्टी भी कर रही कमाल

पटना (एजेंसी)। बिहार की 243 सीटों में से किस सीट पर कौन जीत दर्ज कर रहा है इसका सही पता तो 14 नवंबर को चलेगा लेकिन उससे पहले मंगलवार शाम एग्जिट पोल के नतीजे सामने आए। चाणक्य स्ट्रेटजी के सर्वे में एक बार फिर बिहार में नीतिश कुमार की सरकार बनती दिख रही है। इस सर्वे के मुताबिक एनडीए को 130 से 138 सीटें मिलती दिख रही हैं। वहीं महागठबंधन को 100 से 108 सीटें जबकि अन्य के खाते में 3 से 5 सीटें जाती दिख रही हैं। एनडीए के भीतर सीटों के हिसाब से सर्वे के नतीजों को देखें तो बीजेपी को 70 से 75 सीटें, वहीं जेडीयू को 52 से 57 सीटें मिलती दिख रही है। वहीं चिराग पासवान की पार्टी को 14 से 19 सीटें मिलती दिख रही हैं।

जिंदगी तलाशने गए थे हिस्से आई मौत...

दिल्ली ब्लास्ट में यूपी के 4 लोगों ने तोड़ा दम, थमने का नाम नहीं ले रहे आंसू

अमरोहा (एजेंसी)। किसी को पेट की भूख दिल्ली खींच लाई थी, कोई बीमार रिश्तेदार को देखने अस्पताल गया था, किसी को थोड़े पैसे कमाने थे कि मजदूरी मिल जाए तो घर का खर्च चल जाए, मगर मौत को कुछ और ही मंजूर था। जिंदगी की जद्दोजहद उन्हें मौत के करीब ले जा पहुंची। दिल्ली कार ब्लास्ट में यूपी से मरने वालों की संख्या 4 पहुंच गई है, 3 लोग घायल हैं। 2 शवों की अभी शिनाख्त नहीं हुई है, जिन्होंने अपनों को खोया है, वे अवाक रह गए हैं। घरवालों और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। अमरोहा के रहने वाले अशोक सिंह और लोकेश अग्रवाल की ब्लास्ट में जान गई है। दोनों दोस्त थे। अशोक दिल्ली परिवहन निगम में नौकरी करते थे, जबकि लोकेश खाद कारोबारी थे।

लाल किला ब्लास्ट में 'आतंकी साजिश'

- अब तक की जांच में फिदायीन हमले की आशंका
- यूएपीए और एक्सप्लोसिव एक्ट में हुई एफआईआर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लाल किले के सामने कल शाम हुए ब्लास्ट के पीछे आतंकी साजिश है। मंगलवार सुबह तक जांच में जो भी पहलू सामने आए उससे यह एक फिदायीन हमला यानी आत्मघाती हमला ही लग रहा है। साथ ही इसका कनेक्शन फरीदाबाद में पकड़े गए टेरर मॉड्यूल से भी माना जा रहा है। हालांकि अधिकारिक तौर पर अब तक इस पर कोई बयान नहीं आया है। डीसीपी नॉर्थ राजा बांठिया का कहना है कि मामले में कोतवाली पुलिस ने यूएपीए (गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम) और एक्सप्लोसिव एक्ट समेत संबंधित धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। अलग-अलग जगह से चार से पांच संदिग्धों को भी हिरासत में लिया गया है। हैरानी की बात यह भी है कि किसी आतंकी संगठन ने अभी तक हमले की जिम्मेदारी भी नहीं ली है। लोक नायक अस्पताल की मॉर्चरी में देर रात ही पांच शवों के पोस्टमॉर्टम भी करवा दिए गए थे। जिन शवों की पहचान नहीं हो सकी थी, उनकी पहचान करने का प्रयास जारी है।

- **तीन घंटे से ज्यादा लाल किले के पास खड़ी थी कार-** जिस आई-20 कार में ब्लास्ट हुआ है, वो कार ब्लास्ट से पहले तीन घंटे तक लाल किले के पास स्थित सुनहरी मस्जिद के पास खड़ी थी। यह खुलासा वहां लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज से हुआ है जिसमें दिख रहा है कि कार दोपहर 3.19 बजे लाल किले की पार्किंग में आकर खड़ी हुई थी। इसके बाद शाम करीब 6.48 बजे वह पार्किंग से बाहर निकलकर गई और फिर उसमें ब्लास्ट हो गया।
- **पुलवामा के अतीक की आईडी पर थी कार-** पुलिस सूत्र ने यह भी बताया है कि जिस कार में ब्लास्ट हुआ है, वो कार पुलवामा के अतीक की आईडी पर उमर मोहम्मद ने ली थी।
बताया जा रहा है कि फिदायीन हमला करने वाला उमर मोहम्मद ही था।
- **एनआईए करेगी दिल्ली ब्लास्ट केस की जांच-** गृह मंत्रालय ने दिल्ली कार ब्लास्ट के 20 घंटे बाद मामले की जांच एनआईए को सौंप दी है।

फरीदाबाद टेरर मॉड्यूल से है कनेक्शन

असल में, लाल किले के पास जिस कार में सोमवार शाम को विस्फोट हुआ, उसके ड्राइवर का कथित तौर पर फरीदाबाद टेरर मॉड्यूल से संबंध था। दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने बताया कि पुलवामा का निवासी और पेशे

से डॉक्टर उमर मोहम्मद कथित तौर पर वह हुंदै आई-20 कार चला रहा था, जो लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास पार्किंग क्षेत्र में हुए विस्फोट में इस्तेमाल हुई थी। पुलिस सूत्रों ने बताया कि शुरुआती पुलिस जांच के अनुसार विस्फोट में अमोनियम नाइट्रेट, फ्यूल ऑयल और डिटोनेटर का इस्तेमाल किया गया हो सकता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 12 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

बिहार चुनाव के दूसरे फेज में भी बंपर वोटिंग

नवादा में बीजेपी प्रत्याशी को ग्रामीणों ने खदेड़ा

दूसरे फेज में भी 60 फीसदी से ज्यादा वोटिंग

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा के दूसरे और आखिरी फेज के लिए 20 जिलों की 122 सीटों पर वोटिंग खत्म हो गई है। पहले फेज की तरह इस बार भी बंपर वोटिंग हुई है। दूसरे फेज में भी 60 फीसदी से ज्यादा मतदान की खबर है। दोपहर 1 बजे तक 47.62 फीसदी मतदान हुआ था। जो पहले फेज से लगभग 6 प्रतिशत ज्यादा रहा। वहीं मुस्लिम बाहुल किशनगंज में सबसे ज्यादा मतदान हुआ है। अररिया में बीजेपी और कांग्रेस समर्थक भिड़ गए। कांग्रेस समर्थकों का आरोप है कि बीजेपी वालों ने पटक-पटक कर मारने की बात कही। बेतिया में पैसा लेते दो राजद समर्थकों को गिरफ्तार किया है। नवादा के हिसुआ से बीजेपी प्रत्याशी अनिल सिंह को धरिया गांव के लोगों ने खदेड़ दिया। लोगों का कहना था कि आपने कोई काम नहीं किया है। दूसरे फेज में 12 मंत्रियों समेत 1302 उम्मीदवार मैदान में हैं। जिनकी किस्मत का फैसला 3.70 करोड़ मतदाता करेंगे। 20 जिलों की 45,399 बूथ पर वोटिंग हो रही है। इनमें 4,109 बूथों को संवेदनशील घोषित किया गया है। संवेदनशील बूथों पर शाम 4 से 5 बजे तक वोटिंग हुई। जबकि अन्य बूथों पर शाम 6 बजे तक मतदान हुआ। नतीजे 14 नवंबर को आएंगे। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के दूसरे चरण में मंगलवार को मतदान के दौरान फारबिसगंज सीट पर कांग्रेस और भाजपा समर्थकों के बीच झड़प हो गई। घटना के बाद कुछ देर के लिए माहौल तनावपूर्ण हो गया। हालांकि, प्रशासन के हस्तक्षेप के बाद स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया। मिली जानकारी के अनुसार, फारबिसगंज कॉलेज चौक के पास कांग्रेस और भाजपा समर्थकों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी

हो गई जो देखते ही देखते भिड़ंत में बदल गई। बताया जा रहा है कि भाजपा प्रत्याशी की गाड़ी पर लगे पार्टी झंडे को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने आपत्ति जताई, जिसके जवाब में भाजपा समर्थकों ने भी कांग्रेस प्रत्याशी की गाड़ी पर लगे झंडे पर आपत्ति व्यक्त की। घटना की सूचना मिलते ही कांग्रेस प्रत्याशी मनोज विश्वास और किरकिचिया पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि कफिल अंसारी के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाजपा प्रत्याशी को खदेड़ दिया, जिसके बाद भाजपा प्रत्याशी अपनी गाड़ी से अन्य मतदान केंद्रों की ओर रवाना हो गए। स्थिति पर काबू पाने के बाद फारबिसगंज एसडीपीओ ने निष्पक्षता बनाए रखने के लिए दोनों प्रत्याशियों की एक-एक गाड़ी को जब्त कर लिया।

हम पूरी तरह से भारतीय, आतंकी होने का आरोप झूठा

डॉ. मुजम्मिल शकील की मां नसीमा का बड़ा बयान

श्रीनगर (एजेंसी)। दिल्ली कार विस्फोट के पीछे की भयावह सफेदपोश आतंकी साजिश का पर्दाफाश हुआ है। माना जा रहा है कि दिल्ली ब्लास्ट के पीछे तीन कश्मीरी डॉक्टरों की संलिप्तता है। तीन में से दो डॉक्टर जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के रहनेवाले हैं। खास बात ही कि उनका गांव भी एक ही है। पुलिस ने दोनों के परिवारवालों को नजरबंद करके रखा है। उनसे पूछताछ की जा रही है। आसपास इलाके में सुरक्षा सख्त कर दी गई है। आरोपी आतंकी डॉक्टर्स के घर पर आस-पड़ोस और रिश्तेदारों का आना-जाना लगा है। उनके परिवार ने अपने बेटों के आतंकी लिंक की किसी भी जानकारी से इनकार किया है। आतंकी गतिविधि में में गिरफ्तार डॉ. मुज़म्मिल की मां नसीमा ने कहा कि उनका बेटा मुजम्मिल लगभग चार साल पहले घर से चला गया था। वह दिल्ली में डॉक्टर के तौर पर काम कर रहा था। नसीमा ने कहा कि हम भारतीय हैं। उनका बेटा भी भारत से प्यार करता है। वह ऐसा नहीं कर सकता है। वहीं मुज़म्मिल के भाई आज़ाद शकील ने आरोपों से इनकार किया। उन्होंने कहा कि यह आरोप लगाया जा रहा है कि वह एक बड़ा आतंकवादी है। हमें इसकी कोई जानकारी नहीं है। पिछले पांच दशकों से, हमारे परिवार का कोई भी सदस्य किसी भी मामले में शामिल नहीं रहा है। शकील ने आगे कहा कि परिवार, जो मुख्यत: किसान है, को अपने राष्ट्रवादी रुख के कारण पहले भी विरोध का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि हम पूरी तरह से भारतीय हैं और भारत के लिए पत्थर उठाए हैं। आप गांव में किसी से भी इसकी पुष्टि कर सकते हैं। मुजम्मिल को एक अच्छा इंसान बताते हुए, शकील ने कहा कि उस पर आतंकी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप हैं, लेकिन हमें अभी तक उससे मिलने नहीं दिया गया है।फउन्होंने बताया कि मुज़म्मिल अपनी बहन की शादी में शामिल होने के लिए घर लौटा था, जो पहले रविवार को होने वाली थी, लेकिन अब रद्द कर दी गई है। डॉक्टर अपने पिता की सर्जरी के लिए पहले कश्मीर भी गए थे।

निठारी हत्याकांड का दोषी सुरेंद्र कोली होगा आजाद

सुप्रीम कोर्ट ने आखिरी केस में भी कर दिया है बरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को नोएडा में 2005-2006 के निठारी हत्याकांड से जुड़े हत्या और रेप कसे में सुरेंद्र कोली को बरी कर दिया है। कोर्ट ने सुरेंद्र की उस क्यूरेटिव पिटीशन को मंजूरी दे दी, जिसे उसने खुद को दोषी ठहराए जाने के खिलाफ दायर किया था। फरवरी 2011 में 15 साल की एक लड़की की हत्या के मामले में कोली की दोषसिद्धि को सुप्रीम कोर्ट ने

बरकरार रखा था। हालांकि, इलाहाबाद हाईकोर्ट से बाकी 12 मामलों में बरी किए जाने के बाद उसने इस साल एक बार फिर क्यूरेटिव पिटीशन लगाई थी। सीजेआई बीआर गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस विक्रम नाथ की बेंच ने कोली की दोषसिद्धि को खारिज करते हुए कहा कि उसे तत्काल रिहा किया जाए। सुरेंद्र के वकील युग मोहित चौधरी कहते हैं, 19 साल बाद जिन 13 मामलों में उसे मौत की सजा सुनाई गई थी, उनमें से 12 में वह पहले ही निर्दोष साबित हो चुका था। एक मामला बचा था, जिसमें पांच अदालतों ने उसे दोषी घोषित कर मौत की सजा सुनाई थी। आज सुप्रीम कोर्ट ने उस मामले में भी पहले के फैसलों को पलट दिया है। इस बेचारे को किसी ताकतवर व्यक्ति को बचाने के लिए फंसाया गया था। हर सबूत झूठा था, एक भी दोषसिद्धि को सही नहीं ठहरा सकता।

आधुनिक भारत के निर्माण में लौह पुरुष सरदार पटेल की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही

सरदार पटेल ने देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया : डॉ. मोहन यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने मंगलवार को भोपाल स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर भोपाल-सीहोर लोकसभा क्षेत्र में निकाले जा रहे यूनिटी मार्च को संबोधित कर झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आधुनिक भारत के निर्माण में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। सरदार पटेल ने अनेकों रियासतों को एक करते हुए अखंड भारत की नींव रखी। सरदार पटेल ने देश की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने देश को एक करने का काम किया। सरदार पटेल के हाथों में नेतृत्व होता तो शायद हम आजादी के बाद चीन-अमेरिका के समकक्ष होते। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में कटहल और आम के पौधे रोपे। यूनिटी मार्च कार्यक्रम को सांसद श्री आलोक शर्मा ने भी सम्बोधित किया।

भारत जिस मजबूती के साथ खड़ा है, उसमें सबसे बड़ी भूमिका पटेल की : डॉ. मोहन यादव- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आजादी के समय सरदार पटेल ने पाकिस्तान की घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए देश को सुरक्षित रखा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया के सामने जिस मजबूती के साथ खड़ा है, उसमें सबसे बड़ी भूमिका सरदार पटेल की रही है। सरदार पटेल की 150वीं जयंती में उनके गौरवशाली कार्यों का स्मरण करने के लिए प्रदेश में यूनिटी मार्च का आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने सरदार पटेल की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और पुलिस बैंड द्वारा बजाई जा रही देशभक्ति गीतों की धुनों के बीच आसमान में तिरंगे बैलून छोड़े। सामूहिक समवेत स्वर में वंदे मातरम का गान हुआ। यूनिटी मार्च में 2 हजार से अधिक युवाओं ने भाग लिया।

अखंड भारत के लक्ष्य से युवा पीढ़ी को अवगत कराने के लिए गतिविधियां जारी:श्री हेमंत खण्डेलवाल- भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने देश को एक करने का काम किया और 500 से ज्यादा रियासतों को देश में मिलाया। अगर सरदार पटेल के हाथों में उस दौर में देश का नेतृत्व होता तो देश बहुत तरक्की करता। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश की अर्थव्यवस्था को 11वें से चौथे नंबर पर लेकर आए हैं। हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल के विचारों को इस अभियान के माध्यम से आगे बढ़ाने का अवसर मिला है और हमें युवा पीढ़ी तक इसे लेकर जाना है। हमारा देश दुनिया में बुलंदियों पर जाए, इसी बात को ध्यान में रखकर हमें आगे बढ़ना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज सरदार पटेल के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विचारों को धरातल पर उतारा जा रहा है। यदि हम सब उनके बताए मार्ग पर चलकर एकता, परिश्रम और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखकर काम करेंगे तो भारत न केवल सशक्त बनेगा, बल्कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

इस अवसर पर विधायक श्री भगवानदास सबनानी, महापौर श्रीमती मालती राय, जिला अध्यक्ष श्री रविंद्र यति, पूर्व सांसद श्री आलोक संजर, पूर्व विधायक श्री ध्रुव नारायण सिंह एवं नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी उपस्थित रहे।

साजिश करने वालों को छोड़ा नहीं जाएगा

दिल्ली बम धमाके पर बोले पीएम नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को दिल्ली में लाल किले के पास हुए बम विस्फोट में 13 लोगों के मारे जाने के बाद कड़ी चेतावनी दी। भूटान के थिम्पू में बोलते हुए उन्होंने कहा, इसके पीछे के षड्यंत्रकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। सभी जिम्मेदार लोगों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा। प्रधानमंत्री राजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक के 70वें जन्मदिन समारोह में शामिल होने के लिए पड़ोसी देश की दो दिवसीय यात्रा पर आज थिम्पू पहुंचे। एक सार्वजनिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने विस्फोट को भयावह बताया और कहा कि वह प्रभावित परिवारों के दुख को समझते हैं। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, आज मैं यहां पर बहुत ही भारी मन से आया हूं। कल शाम दिल्ली में हुई भयावह घटना ने सभी के मन को व्यथित कर दिया है। मैं पीड़ित परिवारों का दुख समझता हूं। आज पूरा देश उनके साथ खड़ा है। मैं कल रात भर इस घटना की जांच में जुटी हुई सभी एजेंसियों के साथ, सभी महत्वपूर्ण लोगों के साथ संपर्क में था। उन सभी के साथ विचार विमर्श चल रहा था। जानकारियों के तार जोड़े जा रहे थे।

ब्लास्ट के बाद 11 राज्यों में हाई अलर्ट

अयोध्या,काशी-मथुरा सहित सेंसेटिव जगहों पर सुरक्षा बढ़ाई,पब्लिक प्लेस पर पुलिस तैनात

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में लाल किले के पास सोमवार शाम कार में हुए धमाके के बाद 11 राज्यों में हाई अलर्ट का ऐलान कर दिया गया है। इनमें दिल्ली- एनसीआर, हरियाणा, पंजाब, यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, गुजरात, छत्तीसगढ़ शामिल हैं। तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश में भी पुलिस ने निगरानी बढ़ा दी है। सीआईएसएफ ने दिल्ली एयरपोर्ट और मेट्रो स्टेशनों सहित दिल्ली-एनसीआर को हाई अलर्ट पर रखा है।

महाराष्ट्र में भी पुलिस हाई अलर्ट पर है। मुंबई में प्रमुख जगहों, नागपुर में संघ मुख्यालय सहित राज्य में प्रमुख जगहों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। यूपी के अयोध्या, काशी, मथुरा जैसे संवेदनशील जिलों में पुलिस अलर्ट पर है। मंदिरों, बाजारों और रेलवे स्टेशनों के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों पर पुलिस ने गश्त बढ़ा दी है।

दिल्ली धमाके के बाद अब पाकिस्तानी वायुसेना अलर्ट

फाइटर जेट्स राजस्थान बॉर्डर पर कर रहे हैं गश्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली धमाके के बाद पाकिस्तान ने घबराहट में राजस्थान से लगी सीमा पर वायु सेना की पेट्रोलिंग शुरू करा दी। उसकी तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने एक इमरजेंसी बैठक की। पीएम शहबाज शरीफ भी देर रात तक बैठकें करते रहे। सोमवार को दिल्ली में हुए धमाके में 11 लोगों की मौत की खबर आई थी, लेकिन घटना के 3 घंटे बाद गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 8 मौतें हुई हैं। इसके बाद अस्पताल से जारी सूची में 9 मौतों की जानकारी दी गई। इसी बीच

जैसलमेर के बाड़मेर में सेना का युद्धाभ्यास ऑपरेशन त्रिशूल चल रहा है। इसमें पाकिस्तानी सीमा के पास हाईवे पर जगुआर फाइटर जेट उतारा गया। ऑपरेशन सिंदूर के बाद यह सबसे बड़ा युद्धाभ्यास है। इस दौरान सुखोई-30 भी इमरजेंसी एयर स्ट्रिप पर उतरा।

गुजरात में पकड़े गए 3 आतंकियों का खुलासा,अहमदाबाद-दिल्ली में भी की रेकी थी

आतंकियों के निशाने पर था आरएसएस का लखनऊ हेडक्वार्टर

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात एटीएस द्वारा पकड़े गए तीन आतंकियों से पूछताछ में बड़े खुलासे हुए हैं। एटीएस के डीएसपी शंकर चौधरी ने बताया कि आतंकियों के निशाने पर राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का लखनऊ हेडक्वॉर्टर था। इसके अलावा आतंकियों ने अहमदाबाद के नरोडा इलाके और दिल्ली के आजाद मैदान के आसपास के इलाकों की भी रेकी कर वहां की तस्वीरें और वीडियो बनाए थे। हथियार लेने अहमदाबाद आया था मोहिउद्दीन एटीएस के डीएसपी शंकर चौधरी और केके पटेल को 7 नवंबर की सुबह सूचना मिली थी कि हैदराबाद का एक आतंकी हथियार लेने अहमदाबाद आया था। इसके बाद टीम ने अडालज टोल प्लाजा से हैदराबाद के आतंकी डॉ. अहमद मोहिउद्दीन सैयद को गिरफ्तार किया था। उसकी कार से तीन विदेशी पिस्टल और 30 कारतूस भी जब्त किए गए थे। इसके अलावा अहमद को हथियार देने आए उत्तर प्रदेश के दो आतंकियों सुहैल और आजाद सुलेमान को भी गुजरात के

पालनपुर से अरेस्ट किया गया था। फिलहाल एटीएस तीनों से पूछताछ कर रही है। ढाई महीने पहले भी अहमदाबाद आया था मोहिउद्दीन आतंकियों से पूछताछ में पता चला है कि आतंकी डॉ. मोहिउद्दीन ढाई महीने पहले भी अहमदाबाद आया था और एक पैकेट में पैसे लेकर लौटा था। पैसे देने वाले शख्स की तलाश जारी है। एटीएस की जांच में यह भी पता चला है कि मोहिउद्दीन के लिए हथियार लेकर आए उत्तर प्रदेश के सुहैल और आजाद सुलेमान को राजस्थान के हनुमानगढ़ से हथियार लेकर गुजरात के कलोल पहुंचने का आदेश दिया गया था। जांच एजेंसी का कहना है कि हनुमानगढ़ पाकिस्तानी सीमा से जुड़ा जिला है। इसलिए अंदेशा है कि सीमा पार से ड्रोन के जरिए इन तक हथियार भेजे गए थे। सायनाइड से भी घातक राइसिन नामक केमिकल तैयार कर रहे थे डॉ. मोहिउद्दीन और उसके साथियों की टीम राइसिन नाम का जहरीला केमिकल तैयार कर रही थी, जो साइनाइड से भी ज्यादा घातक है। इस केमिकल के जरिए आतंकी बड़े नरसंहार की योजना बना रहे थे। वे इसे खाने-पीने की चीजों में पाउडर के रूप में और पानी में तरल रूप में मिलाकर बड़ा नरसंहार करना चाहते थे।

पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में जोरदार धमाका

इस्लामाबाद (एजेंसी)। दिल्ली में लाल किले पर हुए बम धमाके के बाद अब पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद में भी धमाका हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, एक जिला अदालत के बाहर धमाका हुआ है, जिसमें कई लोगों के घायल होने की रिपोर्ट है। ऐसी रिपोर्ट है कि ये धमाका एक कार में हुआ है और कई लोगों के मारे जाने की आशंका है। इंडिया टुडे ने पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से कम से कम 12 लोगों की मौत और 20 से 25 लोगों के घायल होने की जानकारी दी है। इससे पहले दक्षिण वजीरिस्तान के वाना कैडेट कॉलेज पर हुए कॉर्डिनेटेड हमले में एक कार बम और कई आत्मघाती हमलावर शामिल थे, जिनका अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। सुरक्षा बलों ने दो हमलावरों को मार गिराया है और तीन को अंदर ही घेर लिया।

कर्ज के बोझ से दबे बुजुर्ग ने जहर खाया

इंदौर। चंदन नगर इलाके में कर्ज से परेशान बुजुर्ग ने जहर खाकर जान दे दी। मंसाराम सिलोदरे (60) निवासी राजनगर ने आर्थिक तंगी और कर्ज के दबाव में यह कदम उठाया। इलाज के दौरान सोमवार सुबह एमवाय अस्पताल में उनकी मौत हो गई। वह कुछ दिनों से मानसिक तनाव में थे। वे सिलाई का काम करते थे और उनके बेटे धर्मेंद्र भी यही काम करते हैं। परिवार में पत्नी, बहू और दो पोते हैं। बेटे ने बताया कि उनके पिता पिछले मंगलवार को अचानक घर से निकल गए थे और चार दिन तक लापता रहे। शुक्रवार रात जब वे घर लौटे तो उनकी तबीयत काफी खराब थी। अस्पताल ले जाने पर डॉक्टरों ने बताया कि उन्होंने जहर खा लिया है। उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई। उन पर ढाई लाख रुपए का कर्ज था। कर्जदार फोन पर लगातार पैसे लौटाने का दबाव बना रहे थे, जिससे वह परेशान रहते थे। कई बार इस बात को लेकर घर में झगड़ा भी हुआ था, लेकिन वे किसी कर्जदार का नाम बताने से बचते रहे। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी।

समय पर मकान नहीं बनाया, प्रताड़ना में फांसी लगाई

इंदौर। मकान निर्माण से जुड़ी प्रताड़ना के चलते बुजुर्ग ने फांसी लगाकर जान दे दी थी। पुलिस जांच में सामने आया कि दो ठेकेदार उसे लंबे समय से परेशान कर रहे थे। लसूडिया पुलिस के अनुसार, मृतक दयाल (65) पिता चुन्नीलाल सोमलिया निवासी स्कीम नंबर 114 ने 16 अक्टूबर को अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। घटना स्थल से सुसाइड नोट मिला था, जिसमें दयाल ने लिखा कि मैं दयाल कुमार सोमलिया, मुझे ठेकेदार प्रकाश यादव निवासी वीणा नगर और शिवा यादव निवासी कल्पना नगर पिछले एक माह से बहुत ज्यादा परेशान और प्रताड़ित कर रहे हैं। कृपया दोनों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाए। सुसाइड नोट में दोनों के मोबाइल नंबर भी दर्ज थे। परिजनों के बयान में सामने आया कि प्रकाश यादव और शिवा यादव के मकान का निर्माण कार्य कर रहे थे, लेकिन काम में लगातार देरी और लापरवाही के कारण वे उन्हें बार-बार टालमटोल करते रहे। इससे मानसिक रूप से परेशान होकर दयाल ने आत्महत्या का कदम उठाया। पुलिस ने सुसाइड नोट को जब्त कर जांच की और आरोपियों प्रकाश तथा शिवा के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया है। मामले की जांच जारी है।

'मुस्कान अभियान' के तहत जागरूकता प्रयास

इंदौर। पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में इंदौर पुलिस द्वारा 'मुस्कान विशेष अभियान' के अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों और शैक्षणिक संस्थानों में लगातार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अभियान का उद्देश्य बालिकाओं एवं महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना, गुमशुदा बच्चों की दस्तयाबी करना तथा उनमें आत्मविश्वास और स्वावलंबन की भावना को बढ़ाना है। तेजाजी नगर, राऊ, आज़ाद नगर और खजराना थाना क्षेत्रों में पुलिस अधिकारियों ने विभिन्न विद्यालयों में पहुँचकर छात्र-छात्राओं से संवाद किया। कार्यक्रमों में पुलिस अधिकारियों ने बच्चों को बाल एवं महिला अपराधों, पॉक्सो एक्ट, मानव तस्करी, बाल विवाह, 'गुड-टच-बैड-टच' की पहचान और साइबर अपराधों से बचाव के बारे में जागरूक किया। साथ ही डायल-112, चाइल्ड हेल्पलाइन और साइबर हेल्पलाइन जैसी सेवाओं की जानकारी दी गई। इंदौर पुलिस का यह अभियान समाज में सुरक्षा और जेंडर समानता की भावना को मजबूत करने की दिशा में प्रभावी कदम साबित हो रहा है।

ड्रोन पेट्रोलिंग से पुलिस की संदिग्धों पर नजर

इंदौर। पुलिस उपायुक्त जोन-2 कुमार प्रतीक के निर्देशन में असामाजिक तत्वों व संदिग्ध गतिविधियों पर प्रभावी निगरानी हेतु जोन-2 क्षेत्र में लगातार विशेष चैकिंग अभियान चलाया जा रहा है। सभी थाना प्रभारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में नियमित ड्रोन पेट्रोलिंग के निर्देश दिए गए हैं। भीड़भाड़ वाले बाजारों, सार्वजनिक स्थलों व संवेदनशील इलाकों में पुलिस की पैनी नजर रखी जा रही है।

अभियान में अब तक 29 गुंडा, 21 चाकूबाज और 18 निगरानी बदमाशों की चेकिंग की गई। 37 संदिग्धों से पूछताछ कर 4 पर कार्रवाई हुई। शराब पीकर वाहन चलाने पर 32 वाहन जब्त किए गए, वहीं 185 एमवी एक्ट के तहत चालानी कार्रवाई की गई। सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने वाले 8 लोगों पर कार्रवाई और 2 नशे में धुत व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। थाना लसूडिया, खजराना, विजय नगर, एमआईजी व परदेशीपुरा क्षेत्र में ड्रोन पेट्रोलिंग के माध्यम से संदिग्धों की पहचान जारी है।

पैसे संबंधी विवाद में फांसी लगाने की कोशिश

इंदौर। बच्चों की फीस भरने के लिए 5 हजार रुपए उधार लेने पर विवाद के बाद महिला ने फांसी लगा ली। महिला सोनाली (30) पति गोलू धाकड़ को उसके पिता ताराचंद रविवार शाम एमवाय अस्पताल लेकर आए। पुलिस जांच में पता चला कि सोनाली ने अपनी मां की बुआ से दो महीने पहले बच्चों की फीस भरने के लिए रुपए लिए थे। रुपए लौटाने में देरी होने पर वह रविवार को घर आई और विवाद करने लगीं। इससे परेशान होकर सोनाली ने फांसी लगा ली। परिवार के लोगों ने समय रहते उसे नीचे उतारा और अस्पताल पहुंचाया। जहां उसकी हालत सामान्य है। छत्रीपुरा पुलिस के मुताबिक, सोनाली कुछ समय से अपने माता-पिता के साथ रहती है। पुलिस जांच कर रही है।

संपत्ति संबंधी मामलों पर कड़ी निगरानी और वाहन चोरी रोकने के निर्देश दिए

संभाग स्तरीय कानून व्यवस्था एवं अपराध समीक्षा बैठक आयोजित

इंदौर। पुलिस महानिरीक्षक (ग्रामीण ज़ोन) अनुराग की अध्यक्षता में संभाग स्तरीय कानून व्यवस्था एवं अपराध समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में डीआईजी इंदौर ग्रामीण मनोज कुमार सिंह, डीआईजी निमाड़ सिद्धार्थ बहुगुणा सहित सभी जिलों के पुलिस अधीक्षक मौजूद रहे। आईजी अनुराग ने बैठक में संपत्ति संबंधी अपराधों जैसे चोरी, लूट और वाहन चोरी पर प्रभावी अंकुश लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने पुराने अपराधियों की सतत जांच, अधिक से अधिक चोरी गए माल की रिकवरी और अपराधियों की धरपकड़ पर विशेष जोर दिया। संवेदनशील स्थानों, बाजारों व कस्बों में जनसहयोग से सीसीटीवी कैमरे लगाने के निर्देश दिए गए ताकि अपराधों की रोकथाम सुनिश्चित की जा सके। वाहन चोरी रोकने के लिए प्रभावी रात्रि और प्रभात गश्त चलाने, संदिग्धों की नियमित चेकिंग करने तथा हॉटस्पॉट क्षेत्रों में कैमरे सक्रिय रखने के निर्देश दिए गए। मुस्कान अभियान के तहत गुम बालिकाओं की दस्तयाबी के लिए विशेष प्रयास करने, लंबित अपराधों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने और गंभीर प्रकरणों की मॉनिटरिंग स्वयं पुलिस अधीक्षक द्वारा करने के निर्देश दिए गए। साथ ही, आईजी ने सायबर अपराधों की रोकथाम के लिए एनसीआरपी पोर्टल पर शिकायतें दर्ज कर धोखाधड़ी की राशि रोकवाने, तकनीकी दक्ष आरक्षकों की तैनाती, अवैध गौवंश परिवहन, संगठित अपराध और अवैध शराब मामलों में कठोर कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस कर्मियों की फिटनेस और अनुशासन बनाए रखने हेतु नियमित परेड आयोजित करने पर भी बल दिया।

अपनी हवस मिटाने के लिए सोनम और राज ने राजा का मर्डर किया

राजा के भाई का आरोप, विपिन रघुवंशी को बयान देने बुलाया

इंदौर। हनीमून हत्याकांड में मारे गए राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने आरोप लगाया कि सोनम और उसके प्रेमी राज ने सिर्फ अपनी हवस मिटाने के लिए मेरे भाई राजा की हत्या की। हत्या के पीछे सिर्फ यही मकसद नजर आता है। विपिन को शिलांग के थाना प्रभारी के माध्यम से वॉट्सऐप पर नोटिस भेजा गया था। वे आज 11 नवंबर को बयान दर्ज कराएंगे। उन्होंने कहा कि मैंने ही राजा और सोनम के लापता होने की पुलिस में शिकायत की थी। अब किस विषय में बयान होना है, यह वहीं जाकर पता चलेगा। हमें मामले में कुछ और बातों की भी जानकारी मिली है, जिसकी पुष्टि वहीं होगी। विपिन का कहना है कि हमें अभी तक चार्जशीट नहीं मिली, जिससे भाई के मर्डर का मोटिव पता नहीं चल सका। जहां तक मुझे लग रहा है कि राज और सोनम ने अपनी हवस के लिए राजा की हत्या की। आमतौर पर लोग प्यार में

कुबार्नी देते हैं, लेकिन इन्होंने हवस के लिए उसे मार दिया। राजा रघुवंशी का 2 जून को शिलांग में शव मिला था, जहां वे हनीमून के लिए गए थे। इस मामले में उसकी पत्नी सोनम समेत 5 आरोपी जेल में हैं। शिलांग पुलिस की एसआईटी 790 पेज की चार्जशीट भी कोर्ट में पेश कर चुकी है।

परिवार ने मनाया था राजा का बर्थडे

21 सितंबर को परिवार ने घर में ही राजा का जन्मदिन भी मनाया था। परिवार ने राजा की फोटो के सामने बर्थडे सांग गाया। माँ ने राजा के फोटो की बलाएं भी ली थीं। इस दौरान राजा के दोनों भाई उनकी पत्नी, बच्चे और माता-पिता ने जरूरतमंदों को कंबल बांटे। परिवार ने दीपावली का त्योहार नहीं मनाया।

यह था पूरा मामला

ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की सोनम से शादी इसी साल 11 मई को हुई थी। इसके बाद अपनी पत्नी सोनम रघुवंशी के साथ इसी साल 21 मई को हनीमून मनाने के लिए मेघालय के शिलांग गए थे। जहां वो 23 मई को हनीमून के दौरान लापता हो गए थे।

10 दिन बाद पुलिस ने 30 फीट गहरी खाई से राजा का क्षत-विक्षत शव बरामद किया, जिस पर हथियार से किए गए कई घाव थे। सोनम तब लापता थी। इसके बाद यूपी में उसने सरेंडर किया था। उससे पूछताछ के बाद आकाश, आनंद और विशाल को पकड़ा था। सोनम के राज कुशवाह से प्रेम संबंध थे। हालांकि उसके परिवार ने इस बात से इनकार किया था। पत्नी सोनम, राजा को दर्शनीय स्थलों की सैर के बहाने सुदूर स्थान पर बुलाकर ले गई थी। उनके पीछे अन्य तीनों हत्या के आरोपी भी चले गए थे। फिर दो छुरों से वार कर उसकी हत्या कर दी, जिनमें से एक छुरा बाद में जंगल से बरामद हुआ था।

लव जिहाद के आरोपों में फंसे अनवर कादरी की पार्षदी खत्म, 23 केस दर्ज

पांच साल के लिए चुनाव लड़ने से अयोग्य भी घोषित किया गया

इंदौर। वार्ड 58 के कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी के खिलाफ गंभीर आरोपों को देखते हुए संभाग आयुक्त ने उनकी पार्षदी समाप्त करने का आदेश जारी किया। साथ ही उन्हें आगामी 5 वर्षों तक किसी भी चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित किया गया। यह कार्रवाई मप्र नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 19(1)(अ) के तहत की गई है। कादरी पर लव जिहाद को बढ़ावा देने के लिए युवकों को फंडिग करने, उन्हें इसके लिए दुष्प्रेरित करने के आरोप हैं। कादरी करीब ढाई महीने फरार रहा था। बाद में हुलिया बदलकर कोर्ट में सरेंडर किया। कादरी पर जिले के 10 से ज्यादा थानों में 23 केस पहले से दर्ज हैं। जून में निगम परिषद के सम्मेलन में इसे लेकर विशेष प्रस्ताव लाया गया था। महापौर पुष्यमित्र भार्गव द्वारा की गई शिकायत और पुलिस-प्रशासन की रिपोर्ट के आधार पर संभाग आयुक्त डॉ सुदाम खाड़े ने सोमवार को यह आदेश जारी किया। उन्होंने आदेश में लिखा कि 'कादरी का पार्षद के रूप में बने रहना सार्वजनिक एवं निगम हित में वांछनीय नहीं है।' प्रकरण में अनवर कादरी को अपना पक्ष रखने का मौका दिया गया, लेकिन पेशी पर उपस्थित नहीं हुआ। पत्नी जुलेखा बी ने जवाब पेश किया। इसमें आरोप बेबुनियाद और राजनीतिक विद्वेष में लगाने की बात कही। संभाग आयुक्त ने ऑर्डर में लिखा कि

जवाब में वे कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर पाई। निगम में अब कांग्रेस के 16 पार्षद ही बचे हैं। कुल 85 वार्ड में से भाजपा के 67 पार्षद हैं। अभी कादरी के पास कोर्ट जाने का विकल्प है। वहां से राहत नहीं मिली तो वार्ड में उपचुनाव होगा। उधर, महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा, निर्णय से उनमें कड़ा संदेश जाएगा जो जनप्रतिनिधि होते हुए देश विरोधी गतिविधि में लिप्त हैं।

यह कड़ा संदेश

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि पार्षद कादरी पर इस कार्यकाल के दौरान देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने, 'लव जिहाद' जैसे गंभीर प्रकरणों में फंडिंग करने और नगर निगम की छवि धूमिल करने के आरोप लगे थे। इनमें से कई आरोपों के साक्ष्य सामने आने के बाद शहर के नागरिकों और पार्षदों में उनके विरुद्ध गहरा रोष था। इन घटनाक्रमों को ध्यान में रखते हुए नगर निगम पार्षदों ने सभापति के समक्ष दो-तिहाई बहुमत से प्रस्ताव पारित कर मामला संभागीय आयुक्त को भेजा था। शिकायतों और दस्तावेजों के अध्ययन के बाद आयुक्त ने नियमों के तहत कार्यवाही करते हुए यह निर्णय लिया। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और नागरिकों ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि यह कदम जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने वाला है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने इस फैसले के बाद शहर के कई सामाजिक संगठनों ने मध्य प्रदेश शासन और संभागीय आयुक्त का आभार व्यक्त किया है। उनका कहना है कि यह निर्णय उन लोगों के लिए कड़ा संदेश है जो जनप्रतिनिधि रहते हुए देश विरोधी गतिविधियों में संलिप्त पाए जाते हैं।

इंदौर में पहली बार पार्षदी गई

अनवर कादरी पर धारा-323, 506, 392, 324, 25 आर्म्स एक्ट, 302, 307, 452, 341, 427, 64, 64(2)(एम), धार्मिक स्वतंत्रता अधि. सहित अन्य आपराधिक धाराओं में केस दर्ज हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, यह पहला मौका है जब इंदौर में आपराधिक प्रकरणों के कारण किसी की पार्षदी गई है।

1500 मॉडिफाइड साइलेंसर और 60 हूटर-सायरन कुचलकर नष्ट

ट्रैफिक पुलिस का एक्शन, यह कार्रवाई और तेज होगी

इंदौर। शहर में बढ़ते ध्वनि प्रदूषण और ट्रैफिक अनुशासन के उल्लंघन पर रोक लगाने के लिए यातायात पुलिस ने मॉडिफाइड साइलेंसर, हूटर और सायरन लगाने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त अभियान छेड़ रखा है। पिछले चार महीनों में पुलिस ने करीब 1500 से अधिक मॉडिफाइड साइलेंसर और 60 हूटर-सायरन जब्त किए हैं। यातायात डीएसपी के अनुसार कई वाहन चालक जानबूझकर ऊँची आवाज वाले साइलेंसर लगाकर सड़कों पर शोर मचाते हैं, जिससे ध्वनि प्रदूषण के साथ लोगों को असुविधा होती है। पुलिस अब ऐसे उपकरण बेचने वाली दुकानों पर भी कार्रवाई कर रही है और कई स्थानों पर छापे मारकर अवैध उपकरण जब्त किए गए हैं। अभियान के तहत विजय नगर सर्विस रोड पर जब्त किए गए सभी उपकरणों को रोड रोलर से कुचलकर नष्ट किया गया। ट्रैफिक पुलिस ने साफ कहा है कि आने वाले दिनों में यह कार्रवाई और भी तेज की जाएगी। विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे नियमों का पालन करें, अन्यथा उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। डीसीपी ट्रैफिक आनंद कलादगी ने बताया, मोडिफाइड साइलेंसर लगाने वालों व कार पर हूटर लगाने वालों को समझाइश दे रहे हैं कि वाहनों से इन्हें हटा लें। इसके बाद भी कई लोग नियम पालन नहीं करते। ये साइलेंसर पटाखे जैसी तेज आवाज निकालते थे।

स्कॉर्पियो हादसे में दो की जान लेने वाले 3 आरोपी पकड़ाए, एक फरार

मानव वध की धारा 105 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया

इंदौर। स्कीम-78 में तीन दिन पहले स्कॉर्पियो कार से हुए दर्दनाक हादसे में इंजीनियरिंग के छात्र आयुष राठौर और कृष्णपाल की मौत के मामले में लसूड़िया पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि, एक आरोपी अब भी फरार है। पुलिस ने चारों के खिलाफ मानव वध की धारा 105 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया है। हादसे के समय चारों युवक नशे की हालत में तेज रफ्तार से स्कॉर्पियो दौड़ा रहे थे और जोरदार म्यूजिक पर पार्टी कर रहे थे। टीआई तारेश सोनी के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों में शिवम कुशवाह निवासी वैभव नगर, देवराज चौहान और दीपांशु ठाकुर निवासी सिवनी मालवा (जिला होशंगाबाद) शामिल हैं। चौथा आरोपी रोहित कलावत अब भी फरार है। हादसे के बाद आरोपी कार छोड़कर शराब की बोतलें और पार्टी का सामान लेकर मौके से भाग निकले थे। पुलिस जांच में पता चला कि कार मालिक अभिजीत कुशवाह का भाई शिवम घटना की रात कार लेकर निकला था। रास्ते में उसने रोहित, देवराज और दीपांशु को साथ लिया। चारों ने पहले सुखलिया में एक फ्लैट पर शराब पार्टी की, इसके बाद सड़कों पर कार की स्पीड चेक करने निकल पड़े। इस दौरान देवराज ने कार चलाते हुए बाइक सवार छात्रों को कुचल दिया। हादसे में दोनों की मौके पर ही मौत हो गई।

इंदौर में लगातार चौथी रात कोल्ड वेव, न्यूनतम तापमान 7.9 डिग्री

लगातार तीन रात तापमान 8 डिग्री से कम होने का रिकॉर्ड

इंदौर। रविवार रात न्यूनतम तापमान औसत से 8 डिग्री कम होकर 7.9 डिग्री दर्ज किया गया। शनिवार रात को पारा 7 डिग्री तक चला गया। राजस्थान तरफ से सीधी बर्फीली हवा आने की वजह से तापमान में गिरावट आ रही है। शहर में लगातार चौथी रात कोल्ड वेव से कंपकंपी बनी रही। शाम होते ही तापमान तेजी से गिरने लगा। 6 नवंबर के इतिहास में लगातार तीन रात तापमान 8 डिग्री से कम होने का रिकॉर्ड बना है। अभी ठंड से राहत मिलने के कोई आसार नहीं हैं।अगली छह-सात रातों में भी पारा 10 डिग्री से कम ही रहने वाला है। मौसम विशेषज्ञ अजय कुमार शुक्ला के मुताबिक, दिसंबर

में पारा 6-7 डिग्री जाता है तो ओस जम जाती है। गर्म कपड़े भी कम पड़ जाते हैं, लेकिन नवंबर में ऐसा नहीं हो रहा है। दरअसल, दिन का तापमान अधिक बना हुआ है। दिन का पारा 21 से 23 डिग्री और रात का 10 डिग्री से कम रिकॉर्ड होता है तो कड़ाके की ठंड महसूस होती है।

देश के ठंडे शहरों में प्रदेश के 9

मौसम विभाग के मुताबिक, देश के 30 सबसे ठंडे शहरों में मप्र के 9 शहर शामिल रहे। इनमें कल्याणपुर, राजगढ़, इंदौर, भोपाल, बैतूल, उमरिया, नौगांव, छिंदवाड़ा और बालाघाट का मलाजखंड शामिल है। इंदौर, राजगढ़, भोपाल, शहडोल, रीवा, छिंदवाड़ा, बालाघाट, बैतूल में तीव्र शीतलहर चल रही है। सोमवार को इंदौर, राजगढ़, भोपाल समेत प्रदेश के 18 जिलों में शीतलहर चली। मंगलवार-बुधवार को मप्र के 50व हिस्से में शीतलहर के लिए ऑरेंज और यलो अलर्ट जारी किया गया।

इरफ़ान बना हैप्पी पंजाबी, धोखे से ड्रग देकर युवती से दुष्कर्म, सिगरेट से दागा

देवास के एक फ्लैट में रखा, दो साल से शारीरिक और मानसिक शोषण

इंदौर। देवास से जिलाबदर इरफान अली इंदौर में हैप्पी पंजाबी बनकर ड्रग तस्करी कर रहा था। उसने राजस्थान से पढ़ने आई युवती को धोखे से नशा दिया और उससे दुष्कर्म किया। उसके दोस्तों ने भी युवती से जबरदस्ती की। आरोपी उस युवती से ड्रग तस्करी कराना चाहता था। वह इंदौर के कई पब में सप्लाय करता है और शहर के सप्लायर्स से संपर्क में है। इंदौर पुलिस ने सोमवार को उसे गिरफ्तार कर लिया।

विजय नगर टीआई चंद्रकांत पटेल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी इरफान अली उर्फ हैप्पी पंजाबी है। मूल रूप से देवास का रहने वाला है। वह इंदौर में पब एंड बार में नशाखोरी कर नई-नई युवतियों को टारगेट कर उनसे दोस्ती कर दुष्कर्म का आदी है। आरोपी के खिलाफ राजस्थान से आई एक युवती ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह 2023 में एविएशन का कोर्स करने इंदौर आई थी। यहां वह पार्ट टाइम जॉब देख रही थी, उसी दौरान भंवरकुआं इलाके में हैप्पी पंजाबी से दोस्ती हो गई। हैप्पी ने पहचान छुपाकर

उससे दोस्ती की। 'सी-21' मॉल के पीछे एक होटल में धोखे से नशा कराया, फिर दुष्कर्म कर फोटो-वीडियो बना लिए। इन्हें वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल करने लगा। वर्ष 2024 में एक ऑटो चालक से आरोपी का झगड़ा हुआ था। इस दौरान उसे पता चला कि उसका असली नाम हैप्पी पंजाबी नहीं, बल्कि इरफान अली उर्फ हैप्पी अली है। विजयनगर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म, मारपीट,धमकाने, जबरिया वसूली करने और धर्म परिवर्तन करने की गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है।

युवती का दो साल से शोषण

आरोपी दो साल से युवती का शारीरिक व मानसिक शोषण कर रहा था। देवास के एक फ्लैट में उसे रखा हुआ था। गर्भवती होने पर दवा देकर जबरन उसका गर्भपात करवाया। इससे युवती की तबीयत बुरी तरह बिगड़ गई थी। युवती किसी तरह अक्टूबर 2025 में देवास से भागकर इंदौर पहुंची। घर वालों को आप बीती बताई। परिजन ने करणी सेना से संपर्क किया। करणी सेना के मानसिंह राजावत के मुताबिक, सूचना पर उन्होंने इरफान अली को पकड़ा। इंदौर पुलिस की जांच में सामने आया है कि आरोपी गोवा से ड्रग्स लाकर इंदौर के पबों में सप्लाय करता है। दोस्तों ने भी की उसके साथ जबरदस्ती की और उसे सिगरेट से दागा, इसके अलावा उस पर धर्म परिवर्तन का भी दबाव बनाया गया। एफआईआर के मुताबिक युवती ने आरोप लगाए हैं कि इरफान नशा करने का आदी है। वह नशे की तस्करी भी करता है।

युवतियों को नशा कराने के बाद उनसे दुष्कर्म करता है। पीड़िता ने बताया कि इरफान ने ब्लैकमेल करके दोस्त जावेद, मोमिन से भी उसका रेप कराया। मोमिन ने अपनी बहन के यहां उसे रखा था। वहां धर्म परिवर्तन करने और मवेशी का मीट खिलाने का भी दबाव बनाया। इस जगह उसके कई दोस्त आते थे। उसने ड्रग तस्कर बॉब से मिलवाया और ड्रग तस्करी के लिए भी दबाव बनाया। शहर के प्रमुख पबों में वह उसे ड्रग्स सप्लाई करने वाली पेडलर की तरह इस्तेमाल करना चाह रहा था। पीड़ित युवती का ये भी आरोप है कि आरोपी उसे अपने घर देवास लेकर गया। वहां उसकी बातें न मानने पर उसे सिगरेट से दागा और रेप किया।

संपादकीय

महाराष्ट्र : नए समीकरण बनेंगे?

महाराष्ट्र में बहुप्रतीक्षित नगरीय निकाय चुनावों की दुंदुभि बजने के बाद जहां राजनीतिक हलचल तेज हो गई है, वहीं इन स्थानीय स्तर को चुनाव में शक्ति परीक्षण के मद्देनजर नए सियासी समीकरण बनने के आसार भी नजर आ रहे हैं। वैसे भी सत्तारूढ़ एनडीए के लिए पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव के बाद यह पहली बड़ी राजनीतिक परीक्षा होगी। हालांकि अभी तक मोटे तौर यही माना जा रहा है कि इन चुनावों में परंपरागत एनडीए और यूपीए के बीच ही मुकाबला होगा, लेकिन दोनों गठबंधनों में दरार पड़ने के संकेत मिल रहे हैं। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद राज्य चुनाव आयोग ने महाराष्ट्र में 288 नगर परिषदों और नगर पंचायतों के लिए चुनाव कार्यक्रम की घोषणा हाल में कर दी है। इन चुनावों में 1 करोड़ से अधिक मतदाता 2 दिसंबर 2025 को मतदान करेंगे। मतगणना 3 दिसंबर को होगी। यह स्थानीय निकाय चुनावों का पहला चरण है, जिसमें भाजपा नीत महायुति और महाविकास अघाड़ी के बीच मुकाबला होगा। दोहरा मतदान रोकने के लिए सत्यापन प्रणाली शुरू की गई है। ये चुनाव राज्य में 288 नगर परिषदों और नगर पंचायतों के लिए हो रहे हैं। इनमें 246 नगर परिषद और 42 नगर पंचायतें हैं। लेकिन 32 जिला परिषदों और 336 पंचायत समितियों के अलावा 29 नगर निगमों के चुनावों की घोषणा बाद में की जाएगी। स्थानीय स्तर के इन चुनावों में सभी राजनीतिक दल अपनी ताकत का जायजा लेने के मूड में ज्यादा दिख रहे हैं। ऐसे में संभव है कि चुनाव में नए राजनीतिक समीकरण नजर आएं। इसके संकेत मिलने शुरू हो गए हैं। इसका ताजा उदाहरण पुणे में एकनाथ शिंदे की शिवसेना द्वारा पतित पावन संगठन से हाथ मिलाने का ऐलान है। यद्यपि यह संगठन आरएसएस का ही माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि शिंदे सेना हिंदुत्व के मुद्दे पर ही चुनाव में उतरेगी। शिंदे ने कहा भी कि दो धाराएं एक हुई। जबकि राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर यह भाजपा और राकांपा अजीत पवार के साथ है। इसी तरह यूपीए में भी कांग्रेस नगरीय निकाय चुनाव अलग होकर लड़ने के इरादे में है। इस बारे में मुंबई के तिलक भवन में हुई पार्टी की रणनीतिक बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने की। बैठक में मौजूद वरिष्ठ नेताओं ने सर्वसम्मति से तय किया कि कांग्रेस अब केवल इंडिया अलायंस के सहयोगियों के साथ ही चुनावी गठबंधन करेगी। दूसरी तरफ इंडिया अलायंस में शामिल शिवसेना उद्धव गुट मनसे से गठबंधन लगभग फाइनल कर चुकी है। साथ ही यह भी चाहती है कि राज ठाकरे नीत मनसे महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन महाविकास आघाड़ी (एमवीए) का हिस्सा बने। लेकिन कांग्रेस इसके पक्ष में नहीं है। उसे उद्धव ठाकरे द्वारा अपने चचेरे भाई राज ठाकरे को गले लगाना रास नहीं आ रहा है। दोनों भाई लगातार यह संदेश दे रहे हैं कि वो अगला चुनाव मिलकर लड़ेंगे। कांग्रेस शरद पवार की राकांपा और उद्धव ठाकरे की शिवसेना से कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन वह राज ठाकरे के करीब नहीं जाना चाहती। इसका कारण है राज ठाकरे का उत्तर भारतीय, मुसलमान और हिंदी विरोधी होना। यूं कहने को कांग्रेस ने पिछले दिनों शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के गठबंधन एमवीए ने मतदाता सूचियों में कथित अनियमितताओं के खिलाफ मनसे के साथ मिलकर 'सत्य मार्च' निकाला था। लेकिन कांग्रेस की ओर से इस संयुक्त मोर्चे में बेहद सीमित उपस्थिति दर्ज की गई, जिससे साफ संकेत मिला कि पार्टी मनसे से गठजोड़ को लेकर सहज नहीं है। हालांकि कांग्रेस को अकेले लड़कर कितनी सीटें मिलेंगी, कहना मुश्किल है।

नजरिया

संजय सक्सेना

लेखक लखनऊ के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बिहार चुनाव में उप्र की साख दांव पर

बिहार में पहले चरण के मतदान के दौरान 18 जिलों की 121 सीटों पर औसतन 65.08 प्रतिशत वोटिंग दर्ज हुई। यह आंकड़ा 2020 के विधानसभा चुनाव के मुकाबले लगभग 7.79 प्रतिशत ज्यादा है, जब मतदान 57.29 प्रतिशत हुआ था। दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटों पर करीब 3.70 करोड़ मतदाता मतदान करेंगे। बिहार की कुल 243 सीटों में से लगभग 34 सीटें उत्तर प्रदेश की सीमा से सटी हैं। ये सीटें बिहार के पश्चिमी इलाके जैसे सारण, सीवान, गोपालगंज, भोजपुर, बक्सर, कैमूर, पश्चिमी चंपारण और रोहतास जिलों में आती हैं, जिनकी सीमाएं यूपी के महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, चंदौली और सोनभद्र से लगती हैं। इन इलाकों का रहन-सहन, बोली, खानपान और जातीय समीकरण लगभग एक जैसे हैं। इसलिए बिहार के नतीजों का सीधा असर यूपी की राजनीति पर पड़ना तय माना जा रहा है।

बिहार का विधानसभा चुनाव इस बार सिर्फ एक राज्य की सत्ता का सवाल नहीं है, बल्कि यह पूरे उत्तर प्रदेश की राजनीति का सेमीफाइनल माना जा रहा है। बिहार में हो रही राजनीतिक हलचल की गूंज अब यूपी की सियासत तक पहुंच चुकी है। दिलचस्प बात यह है कि समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने बिहार में एक भी उम्मीदवार नहीं उतारा, लेकिन अपनी पूरी राजनीतिक टीम के साथ चुनाव प्रचार में उतर पड़े। दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी पिछले दस दिनों में बिहार की जमीन पर तीस से अधिक जनसभाएं और एक रोड शो करके अपनी ताकत का पूरा प्रदर्शन किया। उनके साथ डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और यूपी के कई मंत्री व विधायक भी लगातार बिहार में डेरा डाले रहे। यह साफ संकेत है कि बिहार का चुनाव परिणाम 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की दिशा तय करने वाला साबित होगा।

बिहार में पहले चरण के मतदान के दौरान 18 जिलों की 121 सीटों पर औसतन 65.08 प्रतिशत वोटिंग दर्ज हुई। यह आंकड़ा 2020 के विधानसभा चुनाव के मुकाबले लगभग 7.79 प्रतिशत ज्यादा है, जब मतदान 57.29 प्रतिशत हुआ था। दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटों पर करीब 3.70 करोड़ मतदाता मतदान करेंगे। बिहार की कुल 243 सीटों में से लगभग 34 सीटें उत्तर प्रदेश की सीमा से सटी हैं। ये सीटें बिहार के पश्चिमी इलाके जैसे सारण, सीवान, गोपालगंज, भोजपुर, बक्सर, कैमूर, पश्चिमी चंपारण और रोहतास जिलों में आती हैं, जिनकी सीमाएं यूपी के महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, चंदौली और सोनभद्र से लगती हैं। इन इलाकों का रहन-सहन, बोली, खानपान और जातीय समीकरण लगभग एक जैसे हैं। इसलिए बिहार के नतीजों का सीधा असर यूपी की राजनीति पर पड़ना तय माना जा रहा है।

2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी में भाजपा को समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन से बड़ा झटका लगा था। भाजपा का ओबीसी और दलित वोट बैंक बिखर गया था। यही कारण है कि योगी आदित्यनाथ ने बिहार में एनडीए के सभी घटक दलों जेडीयू, एलजेपी (रामविलास), हम और आरएलएम के 43 उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। उनका फोकस बिहार के वोटरों को यूपी के बुलडोजर मॉडल की सफलता दिखाने पर रहा। योगी ने हर सभा में कहा कि उत्तर प्रदेश में अपराधी और माफिया खत्म हुए हैं, कानून का राज स्थापित हुआ है और अब बिहार को भी उसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उनका संदेश साफ था कि यूपी का विकास मॉडल बिहार में भी अपनाया जाए। इस प्रचार के पीछे उनकी रणनीति यह थी कि बिहार में एनडीए की जीत से यूपी में भाजपा के लिए सत्ता की हैट्रिक का माहौल बनाया जा सके।

वहीं अखिलेश यादव ने बिहार में बिना प्रत्याशी उतारे प्रचार अभियान को पूरी मजबूती से चलाया। उन्होंने सात दिनों में 28 जनसभाएं कीं और आरजेडी, कांग्रेस, वामदलों और वीआईपी उम्मीदवारों के लिए वोट मांगे। अखिलेश अपने भाषणों में केंद्र सरकार और योगी सरकार दोनों पर हमला बोलते दिखे। उन्होंने कहा कि भाजपा की राजनीति झूठ और नफरत पर आधारित है, लेकिन जनता बदलाव चाहती है। उन्होंने दावा किया कि यूपी के अवध और अयोध्या में भाजपा को हराने के बाद अब बिहार के मगध में भी भाजपा को हराया जाएगा। बिहार में अखिलेश का यह अभियान सिर्फ महागठबंधन के समर्थन में नहीं था, बल्कि यह उत्तर प्रदेश में अपनी वापसी की पृष्ठभूमि तैयार करने की कोशिश भी थी।

अखिलेश ने बिहार के हर हिस्से में अपने सांसदों और विधायकों को उतार दिया। अफजाल अंसारी, राजीव राय, इकरा हसन, अवधेश प्रसाद, सनातन पांडे, जय प्रकाश अंचल, ओम प्रकाश सिंह और आशु मलिक जैसे नेताओं ने बिहार के अलग-अलग इलाकों में प्रचार की कमान संभाली। अवधेश प्रसाद ने दलित वोटरों को साधने का जिम्मा लिया, जबकि इकरा हसन को सीमांचल की मुस्लिम बहुल सीटों पर भेजा गया। अफजाल अंसारी यूपी सीमा से सटी सीटों पर प्रचार

करते रहे। इस रणनीति का मकसद था कि बिहार में मुस्लिम वोटों का बिखराव न हो और ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम का असर सीमित रहे। 2020 के चुनाव में ओवैसी ने सीमांचल में पांच सीटें जीतकर सभी को चौंकाया था। इस बार अखिलेश ने उसी इलाके में अपने मुस्लिम चेहरों को उतारकर यह संदेश देने की कोशिश की कि बिहार से उठने वाली मुस्लिम राजनीति यूपी में समाजवादी खेमे से बाहर न जाए। इकरा हसन ने कहा कि अगर वोट बंटे तो भाजपा सत्ता में लौट आएगी और इस बार मुख्यमंत्री की कुर्सी नीतीश कुमार को नहीं, बल्कि भाजपा को मिलेगी। अफजाल अंसारी ने भी ओवैसी पर निशाना साधते हुए कहा कि वे वही काम कर रहे हैं जो आरएसएस करती है, मुसलमानों को बांटने का।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार के चुनाव परिणाम का असर यूपी की सियासत पर सीधा पड़ेगा। अगर एनडीए बिहार में जीत दर्ज करता है, तो भाजपा के लिए यूपी में 2027 के विधानसभा चुनाव की राह आसान होगी और उसका मनोबल बढ़ेगा। लेकिन अगर महागठबंधन बिहार में जीतता है, तो इसका लाभ समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को मिलेगा। इससे यूपी में विपक्षी एकजुटता और मजबूत होगी। साथ ही, यह अखिलेश यादव की राजनीति के लिए नया मोड़ साबित होगा क्योंकि वे खुद को अब यूपी के सीमित दायरे से निकालकर राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष का नेता साबित करना चाहते हैं।

बिहार में इस बार जनता का उत्साह अभूतपूर्व है। पहले चरण की 65.08 प्रतिशत वोटिंग अपने आप में एक संकेत है कि मतदाता इस बार बदलाव के मूड में हैं। सर्वेक्षणों के अनुसार बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार इस चुनाव के प्रमुख मुद्दे हैं। 2020 में राजद को 23.11 प्रतिशत वोट मिले थे और भाजपा को 19.46 प्रतिशत। इस बार किसी भी दल का वोट शेयर अभी तक 25 प्रतिशत के पार नहीं गया है, जिससे यह स्पष्ट है कि बिहार में सत्ता की लड़ाई बेहद कड़ी है। ऐसे में बिहार का परिणाम केवल पटना की सत्ता नहीं, बल्कि लखनऊ की राजनीति की दिशा भी तय करेगा।

बिहार और उत्तर प्रदेश के बीच की यह सियासी कड़ी अब पहले से कहीं ज्यादा मजबूत हो चुकी है। योगी आदित्यनाथ और अखिलेश यादव दोनों जानते हैं कि बिहार का यह रण सिर्फ सीटों का नहीं बल्कि भविष्य की सियासत का संदेश देने वाला है। अगर एनडीए की जीत होती है तो योगी का बुलडोजर मॉडल दोबारा यूपी की सियासत में गूंजेगा। लेकिन अगर महागठबंधन सत्ता में लौटता है तो अखिलेश यादव के नेतृत्व में यूपी की विपक्षी राजनीति को नया जोश मिलेगा। इस चुनाव ने साफ कर दिया है कि बिहार अब सिर्फ बिहार नहीं रहा, बल्कि यह उत्तर प्रदेश के अगले चुनाव की राजनीतिक प्रयोगशाला बन चुका है, जहां से आने वाले सालों की सत्ता की पटकथा लिखी जा रही है।

विश्व राजनीति

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

क्यों ढह रही है संयुक्त राष्ट्र की नैतिक दीवार?

द्वितीय विश्व युद्ध की राख से जब मानवता ने नई सुबह की तलाश की, तब संयुक्त राष्ट्र उस आशा की किरण बनकर उभरा था, जो विश्व को युद्ध, वैमनस्य और हिंसा से मुक्ति दिलाने का स्वप्न संजोए था। यह संस्था मानवीय एकता, न्याय और शांति का प्रतीक बननी थी, पर समय के प्रवाह में इसके आदर्श धूमिल पड़ गए। आज जब गाज़ा की गलियाँ खून से रंगी हैं, यूक्रेन युद्ध की राख ठंडी नहीं हुई और जलवायु परिवर्तन मानव अस्तित्व को चुनौती दे रहा है, तब संयुक्त राष्ट्र की मौन भूमिका विश्व-नैतिकता पर प्रश्नचिह्न बन गई है। वह संगठन, जिसे वैश्विक विवेक की आवाज़ होना था, अब शक्तिशाली देशों की कूटनीतिक कठपुतली बनकर रह गया है। मानवता की पीड़ा और राजनीति की शक्ति-साधना के बीच झूलता यह संगठन अब अपने अस्तित्व की सबसे कठिन परीक्षा से गुजर रहा है कि क्या वह फिर से विश्व का नैतिक प्रहरी बन सकेगा?

संयुक्त राष्ट्र की संरचना में ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी छिपी है। इसका सबसे शक्तिशाली अंग संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, पाँच स्थायी सदस्यों के वर्चस्व में है। अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस को 'वीटो पावर' प्राप्त है, जिसके चलते ये देश किसी भी प्रस्ताव को अपने हितों के अनुसार रोक सकते हैं। यह शक्ति असमानता का प्रतीक बन चुकी है। विश्व राजनीति के इस क्लब में अधिकांश देशों की भूमिका 'सुनने' की है, निर्णय लेने की नहीं। भारत, जापान, जर्मनी, ब्राज़ील और अफ्रीकी देशों जैसे प्रभावशाली राष्ट्र, जो जनसंख्या, अर्थव्यवस्था और योगदान की दृष्टि से बराबरी पर हैं, उन्हें आज भी स्थायी सदस्यता से वंचित रखा गया है। यह एक ऐसे संगठन के लिए नैतिक विडंबना है, जो स्वयं को लोकतंत्र, समानता और न्याय का रक्षक कहता है।

सुरक्षा परिषद की यह वीटो संस्कृति वैश्विक न्याय की राह में सबसे बड़ी बाधा बन चुकी है। यूक्रेन युद्ध इसका ज्वलंत उदाहरण है, जहाँ रूस के आक्रमण के विरुद्ध लाए गए प्रस्ताव वीटो के कारण ठंडे बस्ते में चले गए। इसी तरह, गाज़ा में निरंतर होते मानवीय संकट पर भी परिषद असहाय दिखी, क्योंकि अमेरिका ने इस्राइल के विरुद्ध प्रस्तावों को रोक दिया। इस तरह पाँच स्थायी सदस्यों की स्वार्थपरता ने विश्व-न्याय की अवधारणा को खोखला कर दिया है।

संयुक्त राष्ट्र के गठन का आदर्श 'समानता पर आधारित सहयोग' था, परंतु वास्तविकता में वह धीरे-धीरे अमेरिकी प्रभाव की छाया बन गया। संयुक्त राष्ट्र के बजट का लगभग 22 प्रतिशत अमेरिका देता है। आर्थिक रूप से सबसे बड़ा योगदानकर्ता होने के कारण उसका प्रभाव इतना गहरा है कि नीतिगत निर्णयों में भी उसका झुकाव स्पष्ट दिखता है। संयुक्त राष्ट्र महासचिवों की नियुक्ति से लेकर विभिन्न एजेंसियों की दिशा तय करने तक, अमेरिकी नीति-निर्धारण का प्रभुत्व सर्वविदित है। यही कारण है कि जब अमेरिका अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करता है, जैसे इराक युद्ध, या इज़राइल को दी जाने वाली अंधी समर्थन नीति तब संयुक्त राष्ट्र मौन साध लेता है। उसकी निर्बलता दरअसल उसकी निर्भरता से उपजी है। यह संस्था अब उस ताक़तवर देश की कठपुतली लगती है, जिसे कभी विश्व-नैतिकता का प्रहरी होना चाहिए था।

1945 की दुनिया और 2025 की दुनिया में धरती-आसमान का अंतर है। उस समय की समस्याएँ सीमित थीं- राष्ट्रों के बीच युद्ध, उपनिवेशवाद और मानवीय पुनर्निर्माण। पर आज की चुनौतियाँ कहीं अधिक जटिल हैं- जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, महामारी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, असमान विकास और वैश्विक आर्थिक अस्थिरता। संयुक्त राष्ट्र की नीतियाँ आज भी पुराने ढांचे पर टिकी हैं, जबकि संकटों का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। जलवायु शिखर सम्मेलनों में पारित प्रस्तावों की अनदेखी, पेरिस समझौते के वादों की विफलता, और कोविड-19 जैसी वैश्विक आपदा में उसकी धीमी प्रतिक्रिया- ये सब इस बात के प्रमाण हैं कि यह संस्था समय के साथ खुद को अद्यतन नहीं कर पाई है।

संयुक्त राष्ट्र केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक संस्था भी है कम से कम यही उसका दावा था। लेकिन पिछले कुछ दशकों में उसके भीतर नैतिकता की नींव डगमगाई है। अफ्रीका और हैती जैसे देशों में शांति सेनाओं पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों ने उसकी छवि को गहरी क्षति पहुँचाई। ऐसे मामलों में संगठन ने अपेक्षित कठोरता और पारदर्शिता नहीं दिखाई, जिससे उसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग गया। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र के भीतर की नौकरशाही, निर्णय-प्रक्रिया की जटिलता और संसाधन-अपव्यय भी इसे धीमी, असंवेदनशील और अप्रभावी बनाते हैं। वह संगठन जो दुनिया को दक्ष शासन की प्रेरणा देने आया था, आज अपने ही ढांचे में जकड़ा हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र के सबसे प्रमुख उद्देश्यों में से एक था- विश्व शांति की रक्षा। लेकिन क्या वह इसमें सफल रहा? कोरिया युद्ध से लेकर यूगोस्लाविया, सोमालिया, सीरिया और यूक्रेन तक- हर बड़े संघर्ष में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका सीमित या औपचारिक रही। शांति सैनिकों की तैनाती तो हुई, परंतु स्थायी समाधान कहीं नहीं मिला। गाज़ा की त्रासदी इसका नवीनतम उदाहरण है। जहाँ प्रतिदिन सैकड़ों निर्दोषों की मृत्यु हो रही है, वहाँ महासभा के बयान और प्रस्ताव केवल कागज़ी नारे बनकर रह गए हैं। महासचिव एंटोनियो गुतारेस ने बार-बार युद्धविराम की अपील की, पर न कोई सुनवाई हुई, न कोई ठोस कार्रवाई। यह पराजय केवल संयुक्त राष्ट्र की नहीं, बल्कि उस मानवता की भी है, जिसे उसने एकजुट करने का वादा किया था।

संयुक्त राष्ट्र का आर्थिक ढांचा भी उसकी अक्षमता का एक प्रमुख कारण है। उसकी अधिकांश एजेंसियाँ- जैसे WHO, UNESCO, UNICEF सदस्य देशों के अंशदान और अनुदानों पर निर्भर हैं। जब कोई बड़ा देश अपने अंशदान में कटौती कर देता है, तो संस्थान की कार्यक्षमता सीधे प्रभावित होती है। हाल ही में अमेरिका द्वारा WHO की फंडिंग घटाए जाने के बाद स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम ठप पड़ गए। यह स्थिति बताती है कि वित्तीय स्वायत्तता के बिना कोई भी अंतरराष्ट्रीय संस्था स्वतंत्र निर्णय नहीं ले सकती।

आज की दुनिया बहुध्रुवीय हो चुकी है। चीन, भारत, रूस, यूरोप, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश वैश्विक नीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। परंतु संयुक्त राष्ट्र अभी भी पश्चिम-केंद्रित मानसिकता में बंधा है। उसकी एजेंसियों में नेतृत्व प्रायः यूरोपीय या अमेरिकी मूल के व्यक्तियों के हाथों में रहता है। यह प्रतिनिधित्व की असमानता उसकी वैधता को लगातार कम करती जा रही है। इस पृष्ठभूमि में यह संस्था 'विश्व शासन' का मंच नहीं रह गई, बल्कि विश्व की शक्तियों का दर्पण बन गई है, जहाँ शक्तिशाली अपनी परछाई से न्याय तय करते हैं, और कमजोर केवल तालियाँ बजाते हैं। निराशा के इस अंधकार में भी आशा की किरणें मौजूद हैं। संयुक्त राष्ट्र अब भी वह मंच है, जहाँ सभी राष्ट्र- छोटे या बड़े, एक साथ बैठकर वार्ता कर सकते हैं। यह वह एकमात्र संस्था है, जो विश्व युद्ध जैसे संकटों के बीच संवाद की लौ जलाए रखे हुए है। किन्तु इस लौ को तेज़ करने के लिए उसे अपने ढांचे और दृष्टिकोण में गहन सुधार करने होंगे।

सर्वप्रथम, सुरक्षा परिषद का पुनर्गठन समय की माँग है। भारत, जापान, जर्मनी, ब्राज़ील और अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्यता देकर विश्व की वास्तविक शक्ति-संतुलन को प्रतिबिंबित किया जाना चाहिए। वीटो प्रणाली की समीक्षा होनी चाहिए ताकि वह सहयोग के बजाय अवरोध का कारण न बने। दूसरे, संयुक्त राष्ट्र को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनना होगा। उसके फंडिंग मॉडल में पारदर्शिता और समानता जरूरी है, ताकि कोई भी देश अपने आर्थिक प्रभाव से नीतियों को प्रभावित न कर सके। तीसरे, महासभा और सचिवालय को अधिक सशक्त और जवाबदेह बनाया जाना चाहिए। निर्णय-प्रक्रिया को तेज, पारदर्शी और लोक-उत्तरदायी बनाना आवश्यक है। चौथे, डिजिटल युग के नए संकटों- साइबर अपराध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दुरुपयोग, जलवायु आपदा के लिए अलग वैश्विक तंत्र तैयार करना होगा और सबसे महत्वपूर्ण संयुक्त राष्ट्र को अपनी नैतिक विश्वसनीयता पुर्नस्थापित करनी होगी। उसे दिखाना होगा कि वह न किसी का उपकरण है, न किसी शक्ति का मुखपत्र, बल्कि वह वास्तव में मानवता की सामूहिक अंतरात्मा है।

संयुक्त राष्ट्र की आलोचना उचित है, परंतु उसे नकार देना अनुचित होगा। यह संस्था असफलताओं के बावजूद अब भी उस अंतरराष्ट्रीय आशा का प्रतीक है, जो किसी और संगठन में नहीं मिलती। उसकी जड़ता सुधार से ठीक हो सकती है, बशर्ते दुनिया उसके प्रति ईमानदार हो। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व शक्तियाँ अपने संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर मानवता के व्यापक हित में सोचें। संयुक्त राष्ट्र तभी पुनर्जीवित होगा, जब वह राष्ट्रों की कठपुतली नहीं, बल्कि उनके विवेक की आवाज़ बनेगा।यदि उसका रूपांतरण नहीं हुआ, तो आने वाले दशकों में वह केवल इतिहास की एक स्मारक संस्था बनकर रह जाएगा- एक ऐसी याद के रूप में, जो कभी मानवता के सपनों से जन्मी थी, पर अपनी ही जटिलताओं में खो गई। परंतु यदि वह आत्ममंथन कर सका, तो वही संस्था फिर से वह दीप बन सकती है, जो युद्धरत विश्व में शांति की किरणें बिखेर दे- 'मानवता की सामूहिक आत्मा' के रूप में।

अफ्रीकी कबीलाई रीतियों से गुजरते हुए

कटाक्ष

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

(एक)

'एक अफ्रीकी देश के एक कबीले में वह विशेष दिन था। कबीले के बेहद पढ़े-लिखे जहीन प्रशासनिक अधिकारी ने योरूबा देवी ओशुन को हंडिया में भरकर मदिरा का भोग लगाया। फिर ओलोरिशा (मुख्य पुजारी) उसी हंडिया में छिद्र करके मदिरा की धार लगाता हुआ प्रमुख मार्गों से पूरे कबीले को पवित्र करते हुए निकला। मद-प्रसाद वितरित किया गया। प्रसाद पाने में बच्चे भी पीछे नहीं रहे। प्रसाद की दो-दो बूँद गर्भवती स्त्रियों को भी पिलाई गई।'

(दो)

'घाना की टोंगो पहाड़ियों की चट्टानों, गुफाओं और दरारों में स्थित सैकड़ों मंदिरों में वह सबसे शक्तिशाली मंदिर था। जीवन में शांति, स्थिरता, समृद्धि और सुरक्षा की प्राप्ति के लिए दैवीय कृपा पाने के हेतु से जब दिन में बकरियों, भेड़ों की बलि दी जा रही थी तभी निस्तब्ध नीरव अँधेरी रात में एक अबोध शिशु की बलि दे दी गई।'

(तीन)

'अफ्रीकी देश घाना। अलसभोर में उस पवित्र दिन चार साल तीन माह की बच्ची गॉड को समर्पित कर दी गई। वह जीवन भर देवता की पूजा और सेवा में समर्पित रहेगी। समर्पण की रस्म भी देवताओं से विवाह समारोहनुमा संपन्न की गई। तरुणाई आने में दस बरस ही तो बाकी हैं, देवताओं के प्रतिनिधि पुजारी तब तक प्रतीक्षा कर लेंगे।'

(चार)

'अफ्रीकी देश। कबीले में इमली का एक पूजनीय पेड़। पेड़ से बंधी पाँच महिलाएँ। उनके चारों ओर घेरा बनाकर झिंगा-लाला हूम हूम की अनगढ़ ध्वनियों पर झूमते कबीलाई नर-नारी। अगर बोल सकता पेड़ तो यही बताता कि पिछली शाम पहले डायन बताकर उन्हें उनके घरों से घसीटकर बाहर निकाला गया, फिर तने से बांध दिया गया, नंगा करके नाचते नाचते पीटा गया, रात बहुत हो जाने पर उन पाँचों डायनों को यातनाएँ देकर कुल्हाडियों से काट डाला गया।'

(पाँच)

'वह नाइजीरिया का ठेठ ग्रामीण ईलाका है। एक गैर-कानूनी अस्पताल में वह दाईनुमा नर्स है। वहाँ भीड़ होती है। एक गर्भवती महिला को लिंग-निर्धारण परीक्षण के लिए बेहोश किया जाता है, और दूसरी का उसकी सहमति के बिना गर्भपात करा दिया जाता है। वहाँ कोख में कन्या को मारने का काम तो होता ही है, बच जाए तो नवजात कन्या के मुँह में नमक भरकर तो कभी गर्भनाल से गला घोंटकर मार डालने का काम भी किया जाता है। यही उसकी आजिविका है। जो परिवार उसकी सेवाएँ नहीं ले पाते वे कन्या को काँटेदार झाड़ियों में, तेज़ बहते नाले में, कूड़े के ढ़ेर पर फेंक जाते हैं।'

थैंक गॉड, इक्कीसवीं सदी के भारत में यह सब नहीं होता।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अजीब का गरीब से तालमेल यानी अजीबो-गरीब

अजीबो-गरीब किस्म के मास्टर जी ने कक्षा में विद्यार्थियों से, अजीबो-गरीब, विषय पर निबंध लिखने के लिए कहा ।इस पर अजीबोगरीब शीर्षक वाले निबंध पर विद्यार्थियों ने निबंध को लेकर मास्टर जी से अजीबो-गरीब सवाल किया और उनसे पूछा मास्टर जी अजीबो-गरीब गरीब ही क्यों होते हैं अजीबो अमीर क्यों नहीं होते हैं। अजीबो-गरीब को लेकर पूछे यक्ष प्रश्न पर मास्टर जी बोले मैं खुद ही इस अजब गजब सवाल से अजीबो-गरीब सोच में पड़ गया हूं और लोग मुझे इसी कारण अजीबो-गरीब मास्टर जी के रूप में जानने लगे हैं।

विद्यार्थियों ने अजीबो-गरीब निबंध लिखने के लिए गूगल से अजीबो-गरीब सवाल किए, जिनका कुछ ही लाइनों में उत्तर देने के बाद भी गूगल अजीबो-गरीब स्थिति में आ गया। बावजूद उसके विद्यार्थियों ने निबंध लिखें। खैर अजीबो-गरीब विषय पर एक विद्यार्थी ने लिखा कि अजीबो-गरीब में अजीब तो ठीक है लेकिन गरीब कहां से इस अजीब से जुड़ गया ! बेचारा गरीब, गरीब ही रहता है तो उसकी सुनवाई नहीं होती है लेकिन अजीब के साथ जुड़ने से गरीब अजीबो-गरीब हो गया और इस कारण वह न तो पूरा गरीब रहा न ही पूरा अजीब ! इस पर अजीब का गरीब से ही तालमेल क्यों बैठा यह आज तक कोई समझ नहीं पाया। अजीब से अंमीर ने दूरी बनाई, वही अजीब मिडिल क्लास के पास भी नहीं फटका। अजीब ने गरीबों को अपनी गिरफ्त में ले लिया और अजीबोगरीब बनाकर उनसे अजीब हरकत करने के लिए मजबूर कर दिया।

राजनीतिक विरासत से जुड़े परिवार के एक विद्यार्थी ने अजीबो-गरीब का सबसे बड़ा एग्जांपल देते हुए लिखा कि ट्रंप के बयान अजीबो-गरीब है। उनके अजीबो गरीब बयान शोध का विषय है। विद्यार्थी ने आगे लिखा है कि नेताओं के अनाप-शनाप बयान और बयानों के बाद उनकी लीपापोती, विवादित बयानों से बचना और सुर्खियों में बदलने के लिए बयान देना भी अजीबो गरीब लगते हैं। कक्षा के एक चपल और अजीब हरकत करने वाले छात्र ने अपने निबंध में लिखा की विभिन्न बयानों से चर्चा में रहने वाले ट्रंप इतने अजीबो-गरीब है कि दो देशों के बीच चलने वाले युद्ध के विराम कराने में श्रेय लेने के अजीबो गरीब बयान से पीछे नहीं रहते हैं । ट्रंप अमीर है, अजीब है, अजब गजब ढहाते हैं लेकिन चर्चा और सुर्खियों में बने रहने के लिए अजीब हरकत कर अजीबो-गरीब बनने का नाटक खेलते हैं और इसी अजीबो गरीब गतिविधि से वे अपने, बल, से शांति का नोबेल वजीफा पाने में फेल ही गए ।

हमेशा कक्षा में अजीबो-गरीब व्यवहार करने वाले एक विद्यार्थी ने अपने मुताबिक विषय मिलने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए लिखा कि लोग कितने अजीब है जो गरीबों को परिभाषित नहीं कर सके। गरीब, गरीब होता है कहीं भी फिट कर लो वह हो जाता है लेकिन अंमीर अपनी अमीरात से फिट करने से पहले ही अपने आप को दूर कर लेता है। अरे गरीब तो अरबी शब्द है जिसे पहले कभी देखा न हो वह गरीब है एगरीब को निर्धनता से जोड़कर अमीर गरीब वर्गीकृत होने लगे एजो अनजान है अजनबी हैए अलग है, अनोखा है, परदेसी है, जिसे न कोई जानते हैं न पहचानते हैं जो न दिखता है, जो अनोखा है, बेचारा है, विचित्र है वह गरीब है। इस तरह गरीब को अजीब के साथ जोड़ दिया और बीच में, ओ, लगाकर, अजीब ओ गरीब, बना दिया जाता है । वह गरीब जो अदृश्य है, जिस गरीब और उसकी गरीबी से चुनाव लड़े जाते हैं और चुनाव भी जीते जाते हैं । गरीबों के अजीब बर्ताव, तुनक मिजाजी, सनकी पना से गरीब अजीब हो गया है और इस कारण वह वक्त बे वक्त, बात बे बात, समय असमय, बेतुके बयानों से अजीबो गरीब पहचान वाला हो गया है ।

निबंध के उपसंहार में एक विद्यार्थी ने लिखा कि अजीबोगरीब हमेशा अजब गजब हरकतें करते हैं, एक गांव के सरपंच, उप सरपंच दोनों ने जब सफेद शर्ट और सफेद पेंट पहनना शुरू कर दी तो उनके व्हाइट, को व्हाइट हाउस से चुराने वाले अजब गजब जनप्रतिनिधि के रूप में लोग उन्हें जानने लगे । जब वे अजीबो-गरीब हरकतें, व्यवहार प्रारंभ कर दिया तो गांव से शहर तक उन्हें अजब गजब और उनकी गतिविधि को अजीबोगरीब कहा जाने लगा। लेकिन लगातार अजीबो-गरीब बर्ताव ने उन्हें अगले चुनाव में अजनबी और अनजान बना दिया और दोनों अजीबो-गरीब हरकत वालों को जनता ने उन्हें उनके घर का रास्ता पकड़वा दिया।

सेहत

मधुमेह की रफ्तार दोगुनी, हर दसवां भारतीय बीमार

देवेन्द्र सिंह

लेखक पत्रकार हैं।

हाल ही में जारी अंतरराष्ट्रीय मधुमेह महासंघ (आईडीएफ) की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया में 589 मिलियन वयस्क मधुमेह से पीड़ित हैं, जबकि 252 मिलियन लोगों को इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ है कि वे इस बीमारी की गिरफ्त में हैं। वहीं भारत में भी हर दसवां वयस्क डायबिटीज का रोगी है। ऐसे में मधुमेह यानी डायबिटीज अब केवल एक बीमारी नहीं, बल्कि एक मौन महामारी बन चुकी है। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यदि स्थिति पर तुरंत नियंत्रण नहीं पाया गया, तो 2050 तक भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या 15.7 करोड़ तक पहुंच सकती है, जो स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती होगी।

आईडीएफ की रिपोर्ट के अनुसार, वयस्कों में मधुमेह की दर 11.1 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। मधुमेह केवल शुगर की समस्या नहीं, बल्कि यह शरीर के अन्य अंगों हृदय, किडनी, आंखों और मस्तिष्क पर गहरा असर डालती है। दुनिया के साथ भारत में भी स्थिति चिंताजनक है। देश में फिलहाल लगभग 89 मिलियन लोग डायबिटीज से जूझ रहे हैं, जबकि 50 फीसदी लोग ऐसे हैं, जिन्हें ये तक नहीं पता कि वे डायबिटीज से ग्रसित हैं। यह आंकड़ा तब और भयावह लगता है, जब यह जानने को मिलता है कि यह रोग अब बड़ों के साथ बच्चों और किशोरों में भी तेजी से फैल रहा है।

वर्ष 2024 में मधुमेह संबंधी स्वास्थ्य व्यय पहली बार एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से पार गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि मधुमेह जीवन भर साथ रहने वाली बीमारी है। एक बार इसके चपेट में आने के बाद इसे नियंत्रित करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है। वहीं राजस्थान में स्थिति और भी चिंताजनक है। इस वर्ष के अंत तक राज्य में मधुमेह रोगियों की संख्या दस लाख तक पहुंचने का अनुमान है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, राज्य में मधुमेह का प्रसार लगभग 10 प्रतिशत है, जबकि सिर्फ पिछले दस महीनों में छह लाख नए मामले सामने आए हैं। यह इस बात का संकेत है कि बीमारी कितनी तेजी से पैर पसार रही है।

देश के अन्य राज्यों में भी हालात बेहतर नहीं हैं। गोवा में डायबिटीज की दर 26.4 प्रतिशत के साथ सबसे अधिक है। पुडुचेरी 26.3 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। केरल 25.5 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर है। उत्तर प्रदेश में यह दर 4.8 प्रतिशत है, लेकिन यह तेजी से बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अब इस बीमारी की दर में कोई खास अंतर नहीं बचा है। यह धारणा पूरी तरह टूट चुकी है कि मधुमेह केवल शहरी जीवनशैली की देन है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, देश के केवल सात प्रतिशत मरीज अपनी बीमारी को लेकर गंभीर हैं और इसे नियंत्रण में रखने के लिए सभी चिकित्सकीय सलाहों का पालन करते हैं। बाकी 93 प्रतिशत मरीज या तो अपनी बीमारी को हल्के में लेते हैं या उसकी गंभीरता से अनजान रहते हैं। यही लापरवाही आगे चलकर गंभीर जटिलताओं को जन्म देती है।

मधुमेह के साथ हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, स्ट्रोक और किडनी फेल्योर जैसी समस्याएं जुड़ी रहती हैं। इस बीमारी से पीड़ित लोगों में साइलेंट हार्ट अटैक का खतरा कई गुना अधिक होता है। अनुसंधान बताते हैं कि जो व्यक्ति मधुमेह से मुक्त हैं, उनमें दिल का पहला दौरा पड़ने पर मरने की संभावना 20 प्रतिशत होती है, जबकि मधुमेह रोगियों में यह संभावना 80 प्रतिशत तक पहुंच जाती है। अब मधुमेह केवल बुजुर्गों या मध्यम आयु वर्ग तक सीमित नहीं रहा। यह युवाओं और किशोरों तक पहुंच चुका है। 12 से 13 वर्ष के बच्चों में टाइप-2 डायबिटीज के मामले सामने आना बेहद चिंताजनक है। आधुनिक जीवनशैली, जंक फूड, स्क्रीन टाइम और तनाव ने इस बीमारी को युवाओं में भी आम बना दिया है। यदि समय रहते जीवनशैली में बदलाव नहीं किया गया, तो आने वाले वर्षों में डायबिटीज सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौती के रूप में सामने आएगा।

आईडीएफ की रिपोर्ट बताती है कि 2024 में दक्षिण-पूर्व एशिया में मधुमेह से 3,74,000 मौतें हुईं, जिनमें से 3,34,922 अकेले भारत में दर्ज की गईं। इसके अलावा, किडनी से जुड़ी बीमारियों के कारण लगभग 5.3 लाख लोगों की मृत्यु हुई। उच्च रक्त शर्करा अब 11 प्रतिशत हृदय संबंधी मौतों का कारण बन चुका है। फिलहाल भारत में मधुमेह के मरीजों की संख्या 10 करोड़ से अधिक है और अनुमान है कि यदि यही स्थिति बनी रही, तो 2050 तक यह संख्या 15.7 करोड़ को पार कर जाएगी। विशेषज्ञों का मानना है कि मधुमेह की वजह से होने वाली अधिकांश मौतें रोकी जा सकती हैं। वर्ष 1922 में इंसुलिन की खोज के बाद इस बीमारी के इलाज में जबरदस्त प्रगति हुई है। पहले इसे केवल अग्न्याशय की बीटा कोशिकाओं की गड़बड़ी से जोड़कर देखा जाता था, लेकिन अब यह समझ विकसित हो चुकी है कि जीवनशैली और खानपान इसके मुख्य कारण हैं।

1995 के बाद से बाजार में कई नई दवाएं आई हैं, जो मधुमेह को नियंत्रित करने में काफी सहायक हैं, लेकिन यह नियंत्रण तभी संभव है, जब रोगी नियमित दवा ले और स्वयं अनुशासित जीवन अपनाए।

मधुमेह के लक्षण अक्सर धीरे-धीरे प्रकट होते हैं। बार-बार पेशाब आना, अत्यधिक प्यास लगना, लगातार भूख लगना, थकान, वजन में कमी, दृष्टि धुंधलापन और घाव का देर तक न भरना इसके प्रमुख संकेत हैं। सरकार को चाहिए कि इन लक्षणों के बारे में जागरूकता फैलाए, ताकि लोग समय रहते चिकित्सकीय सलाह ले सकें। आज भी देश के आधे से अधिक रोगी बीमारी की जानकारी न होने या अनदेखी के कारण देर से इलाज शुरू करते हैं, जब तक स्थिति गंभीर हो चुकी होती है।

विशेषज्ञ डॉ. संदीप कुमार माथुर का कहना है कि आधुनिक जीवनशैली में बदलाव ही मधुमेह पर नियंत्रण का सबसे प्रभावी उपाय है। नियमित व्यायाम, पैदल चलना, योग, साइकिल चलाना, संतुलित भोजन और तनाव पर नियंत्रण से डायबिटीज का खतरा काफी हद तक कम किया जा सकता है। मोटा अनाज, फल, हरी सब्जियां, प्रोटीन और प्राकृतिक वसा से भरपूर आहार, मीठे पेय पदार्थों और जंक फूड से परहेज अनिवार्य है। पर्याप्त नींद, धूम्रपान और शराब से दूरी भी जरूरी है। मधुमेह की रोकथाम केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामाजिक और सरकारी प्रयास का हिस्सा भी होनी चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देना, नियमित हेल्थ स्क्रीनिंग करना और गांवों तक जागरूकता अभियान पहुंचाना जरूरी है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि यदि भारत आज से ही इस समस्या को गंभीरता से ले, तो न केवल लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है, बल्कि आने वाले दशकों में यह मौन महामारी थामी भी जा सकती है।

विश्व निमोनिया दिवस पर विशेष

निमोनिया नहीं, संवेदना की कमी है असली बीमारी

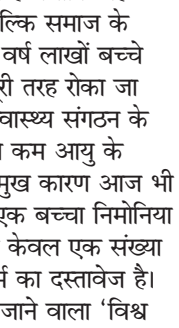

अतुल गोयल

लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं!

निमोनिया अब केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि मानवता की उस वैश्विक परीक्षा में बदल चुका है, जिसमें हर सांस दांव पर लगी है। हालांकि विज्ञान ने इसे हराने के उपाय खोज लिए हैं पर जीत अभी भी अधूरी है क्योंकि यह लड़ाई केवल दवाओं की नहीं बल्कि समाज के सामूहिक संकल्प की भी है। हर वर्ष लाखों बच्चे ऐसी बीमारी से मरते हैं, जिसे पूरी तरह रोका जा सकता है। यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विश्वभर में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में होने वाली मौतों का प्रमुख कारण आज भी निमोनिया है। हर 39 सैकेंड में एक बच्चा निमोनिया से दम तोड़ देता है। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं बल्कि मानवता के लिए शर्म का दस्तावेज है। हर साल 12 नवंबर को मनाया जाने वाला 'विश्व निमोनिया दिवस' इस मौन महामारी के खिलाफ वैश्विक एकजुटता का प्रतीक है। 'विश्व निमोनिया दिवस' की इस वर्ष की थीम 'बाल जीवन रक्षा' इस तथ्य को उजागर करती है कि यदि हम सभी स्तरों पर ठोस कदम उठाएं तो कोई भी बच्चा निमोनिया से मरना नहीं चाहिए। यह थीम केवल चिकित्सा जगत का आह्वान नहीं है बल्कि सरकारों, समुदायों, अभिभावकों और सामाजिक संगठनों की सामूहिक जिम्मेदारी का स्मरण है।

निमोनिया एक ऐसा संक्रमण है, जो फेफड़ों को प्रभावित करता है और ऑक्सीजन के संचार को बाधित कर देता है। यह संक्रमण अक्सर वायरस, बैक्टीरिया या फंगस से फैलता है। विशेष रूप से नवजात और पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे, जिनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अभी विकसित हो रही होती है, सबसे अधिक जोखिम में रहते हैं। जिन बच्चों को पोषण की कमी है, जो प्रदूषणग्रस्त वातावरण में रहते हैं या जिनकी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सीमित है, उनके लिए यह बीमारी और भी घातक हो जाती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं कि यदि निमोनिया का निदान समय पर हो जाए तो इसका उपचार अत्यंत सरल और सस्ता है लेकिन चुनौती यही है कि कई देशों में, विशेष रूप से दक्षिण एशिया और अफ्रीका में अब भी जागरूकता और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण लाखों बच्चे इसका शिकार बन जाते हैं। भारत में भी स्थिति चिंताजनक है। हाल के आंकड़ों के अनुसार, हमारे देश में हर साल पांच वर्ष से कम आयु के लगभग 1.5 लाख बच्चे निमोनिया से दम तोड़ देते हैं जबकि भारत में इस बीमारी की रोकथाम के लिए पर्याप्त साधन मौजूद हैं। टीकाकरण, पोषण और स्वच्छ वातावरण इसके सबसे प्रभावी उपाय हैं। बीते कुछ दशकों में विज्ञान ने निमोनिया से लड़ाई में क्रांतिकारी प्रगति की है। प्न्यूमोकोकल कॉन्जुगेट वैक्सीन (पीसीवी), हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी वैक्सीन (एचआईबी) और मीजल्स वैक्सीन जैसी खुराकों ने बच्चों में निमोनिया के मामलों को उल्लेखनीय रूप से घटाया है। भारत सरकार ने भी 'इंटेंसिव मिशन इंद्रधनुष' के तहत देश के हर बच्चे को इन टीकों तक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया है। इसके अलावा ऑक्सीजन सपोर्ट सिस्टम, पल्स ऑक्सीमीटर, एंटीबायोटिक्स और मोबाइल हैल्थ सेवाओं का विस्तार भी जीवन बचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। फिर भी केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं। निमोनिया के खिलाफ निर्णायक विजय के लिए सामाजिक संकल्प उतना ही आवश्यक है, जितना वैज्ञानिक नवाचार। जब तक समाज स्वयं यह नहीं समझेगा कि हर बच्चे की सांस उसकी जिम्मेदारी है, तब तक यह संकट पूरी तरह समाप्त नहीं होगा। एक गरीब परिवार में जब बच्चा खांसी-जुकाम से जूझता है तो प्रायः इसे साधारण सर्दी समझकर अनदेखा कर दिया जाता है। यही लापरवाही धीरे-धीरे मृत्यु का कारण बन जाती है। जागरूकता की कमी इस बीमारी की सबसे बड़ी ताकत है।

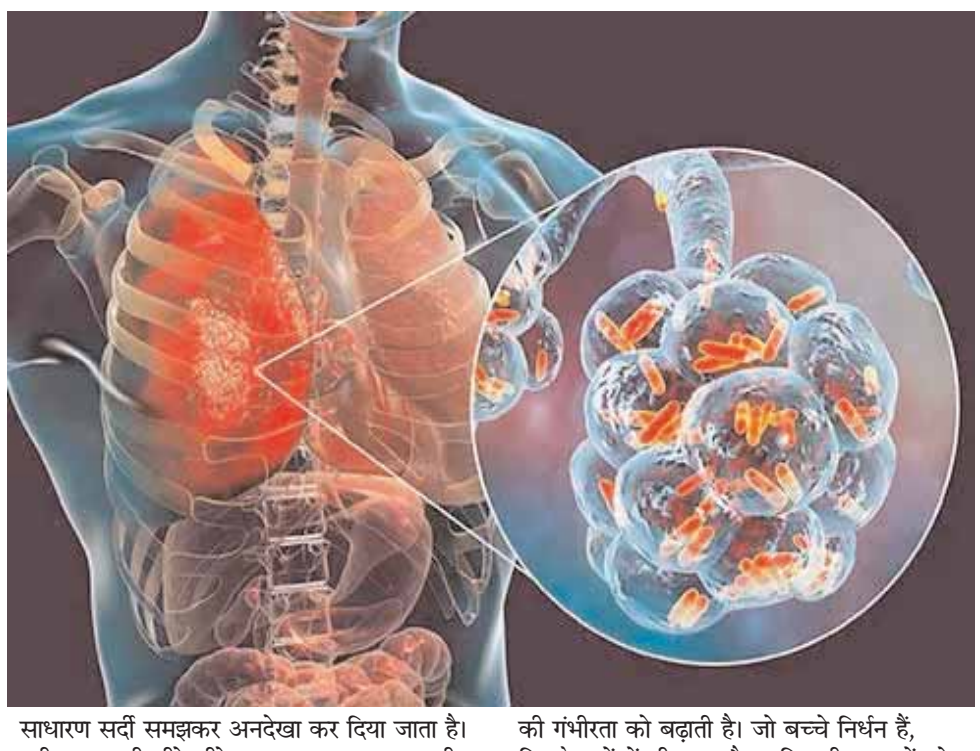

दूसरी बड़ी चुनौती है वायु प्रदूषण, जो निमोनिया के प्रसार में एक अदृश्य सहयोगी की भूमिका निभा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, घर के भीतर का प्रदूषण (जैसे लकड़ी या कोयले से खाना पकाना) और बाहर का प्रदूषण (वाहनों, उद्योगों से निकलता धुआं) दोनों ही बच्चों के फेफड़ों पर घातक प्रभाव डालते हैं। स्वच्छ ईंधन, स्वच्छ हवा और स्वच्छ जल की उपलब्धता इस लड़ाई की आधारशिला है। सामाजिक असमानता भी निमोनिया की गंभीरता को बढ़ाती है। जो बच्चे निर्धन हैं, जिनके घरों में भीड़भाड़ है या जिनकी माताओं को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी नहीं है, वे सबसे अधिक असुरक्षित हैं। इसलिए बाल जीवन रक्षा की इस वैश्विक परीक्षा में शिक्षा, पोषण, स्वच्छता और महिला सशक्तिकरण की भूमिका चिकित्सा से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। स्वास्थ्य किसी अस्पताल की चारदीवारी तक सीमित नहीं रह सकता; यह समाज की सोच, व्यवहार और प्राथमिकताओं में समाहित होना चाहिए। निमोनिया से लड़ाई को केवल स्वास्थ्य मंत्रालय की जिम्मेदारी मान लेना पर्याप्त नहीं। यह बहुआयामी संकट है, जिसके समाधान के लिए बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण आवश्यक है। शिक्षा मंत्रालय से लेकर पर्यावरण विभाग तक, पोषण कार्यक्रमों से लेकर नगर निकायों तक, हर संस्था को इसमें अपनी भूमिका निभानी होगी। यूनिसेफ और 'ग्लोबल कोएलिशन अगेंस्ट चाइल्ड निमोनिया' जैसी संस्थाएं पहले ही इस दिशा में काम कर रही हैं परंतु स्थानीय समुदायों की सहभागिता के बिना यह युद्ध अधूरा है। कोविड-19 महामारी ने यह सिखाया कि सांस की कीमत कितनी अनमोल है। उसी अनुभव को आधार बनाकर अब समय आ गया है कि हम निमोनिया को भी उसी गंभीरता से लें। यह रोग केवल 'गरीबों की बीमारी' नहीं है बल्कि मानवता की जिम्मेदारी है। किसी भी बच्चे को केवल इसलिए मरने देना कि उसके पास इलाज या ऑक्सीजन की पहुंच नहीं थी, यह 21वीं सदी की सबसे बड़ी विफलता होगी।

विज्ञान ने हमें टीके, दवाएं, ऑक्सीजन और ज्ञान के रूप में औजार दिए हैं। अब समाज को अपने हिस्से का संकल्प निभाना है। यदि हर माता-पिता यह सुनिश्चित करें कि उनका बच्चा समय पर टीका लगवाए, हर सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता यह वचन दे कि कोई बच्चा उसकी निगरानी से छूटे नहीं और हर सरकार यह प्रण ले कि बजट में सबसे बड़ा हिस्सा बाल स्वास्थ्य को मिलेगा तो निमोनिया का नाम इतिहास में केवल एक पराजित बीमारी के रूप में दर्ज होगा। जब हर 39 सैकेंड में एक मासूम जीवन बुझ रहा हो तो यह केवल एक संख्या नहीं बल्कि समाज के संवेदनहीन हो जाने की चेतावनी है। मानवता का असली विकास तभी संभव है, जब विज्ञान, नीति और संवेदना एक दिशा में काम करें। हमें यह तय करना होगा कि स्वास्थ्य केवल इलाज नहीं बल्कि एक नैतिक दायित्व है। हर सांस बचाने की यह जंग अब केवल डॉक्टरों की नहीं, हमारी भी है। विज्ञान ने रास्ता दिखा दिया है, अब संकल्प मानवता को दिखाना है। जब हर बच्चा बिना भय और बीमारी के सांस ले सकेगा, तभी 'विश्व निमोनिया दिवस' का उद्देश्य पूर्ण होगा।

यूनिसेफ इंडिया

सर्वाइकल कैंसर और सड़क हादसों पर चिंता

देश में तीन साल पहले सर्वाइकल कैंसर के 79,103 नए मामले दर्ज किए गए थे। 34,805 महिलाओं की इसी बीमारी से मृत्यु हुई। जबकि, यह एक ऐसी बीमारी है, जिसे रोका जा सकता है। दूसरी ओर सड़क सुरक्षा पर एक विशेष सत्र में बताया गया कि भारत में हर साल 150,000 से अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जिसमें बच्चे और युवा अधिक प्रभावित होते हैं। वर्कशॉप में किशोर स्वास्थ्य से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों, खासतौर पर सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मीडिया से अपनी भूमिका को और मजबूत करने का आह्वान किया गया।

अरुण कुमार

(वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक)

दुनिया के 180 देशों की मुश्किलों जगहों में वंचित बच्चों तक पहुंच बनाने और काम करने को समर्पित 'यूनिसेफ' ने किशोरों को सर्वाइकल कैंसर व सड़क दुर्घटनाओं से बचाने की जागृति के लिए नई पहल की है। किशोर स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों पर मीडिया की भूमिका को सशक्त बनाने के उद्देश्य 'यूनिसेफ इंडिया' ने नई दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय 'ट्रेनर्स ऑफ ट्रेनर्स वर्कशॉप' की। उद्घाटन सत्र में यूनिसेफ इंडिया की कम्युनिकेशन प्रमुख जाफरिन चौधरी ने कहा कि युवा उन स्वास्थ्य मुद्दों पर सटीक जानकारी पाने के हकदार हैं, जो उन्हें और समाज को प्रभावित करते हैं। यह तभी संभव है जब वैज्ञानिक और चिकित्सा जानकारी को मीडिया के जरिए सटीक और जिम्मेदारी से लोगों तक पहुंचाया जाए। गलत जानकारी से लड़ने का सबसे अच्छा तरीका यही है। हमें सीखना, विश्लेषण करना और समझना होगा कि कैसे तकनीकी जानकारी को प्रस्तुत किया जाए ताकि लोग उसे समझें और उस पर भरोसा करें। उनका मानना था कि सर्वाइकल कैंसर, सड़क सुरक्षा और ऐसे कई अन्य मुद्दों पर जागरूकता को पत्रकारों में 'क्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' यानी तथ्यों की गहराई से जांचने की क्षमता के माध्यम से और बेहतर तरीके से समझाया व प्रसारित किया जा सकता है। वरिष्ठ संपादकों के मार्गदर्शन में इस दिशा में यूनिसेफ पिछले एक दशक से प्रयासरत है।

यूनिसेफ इंडिया कंट्री ऑफिस के स्वास्थ्य प्रमुख (कार्यकारी) डॉ विवेक वीरेंद्र सिंह ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर ऐसा एकमात्र कैंसर है जिसे वैक्सीन से रोका जा सकता है। जागरूकता इस बीमारी से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका है। मीडिया समाज में व्याप्त झिझक और गलत धारणाओं को तोड़ने में अहम भूमिका निभा सकता है। अगर मीडिया इस विषय को वर्जित मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि एक साझा सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता के रूप में प्रस्तुत करे, तो महिलाएं समय पर मदद ले सकेंगी। हर सटीक और संवेदनशील खबर हमें उस भविष्य के और करीब ले जाती है, जहां कोई भी महिला एक रोकी जा सकने वाली बीमारी से अपनी जान न गंवाए।

डॉ सिंह ने कहा कि हर दुर्घटना रोकी जा सकती है और मीडिया सड़क सुरक्षा को एक साझा सामाजिक और शासन के मुद्दे के रूप में फिर से परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जिसके लिए त्रासदी के बाद की सहानुभूति के बजाए डेटा-आधारित जवाबदेही की आवश्यकता है। अगर मीडिया, नीति निर्माताओं और नागरिक डाटा प्लेटफॉर्म के बीच मजबूत तालमेल बना सके, तो सड़क सुरक्षा से जुड़ी खबरें रोकथाम, कानून के पालन और समानता पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकेंगी।

स्वास्थ्य विषयों में संपादकों की रणनीतिक भागीदारी के लिए कार्यशाला कार्यशाला का विषय 'उभरती किशोर स्वास्थ्य चुनौतियां: सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा' आयोजित की गई। उल्लेखनीय है कि देश में साल 2022 में देश में सर्वाइकल कैंसर के लगभग 79,103 नए मामले दर्ज किए गए और 34,805 महिलाओं की इस बीमारी से मृत्यु हुई। जबकि, यह एक ऐसी बीमारी है, जिसे रोका जा सकता है। दूसरी ओर सड़क सुरक्षा पर एक विशेष सत्र में बताया गया कि भारत में हर साल 150,000 से अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जिसमें बच्चे और युवा सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। वर्कशॉप में किशोर स्वास्थ्य से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों, खासतौर पर सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए मीडिया से अपनी भूमिका को और मजबूत करने का आह्वान किया गया।

वर्कशॉप में वरिष्ठ स्वास्थ्य संपादकों के साथ 'क्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' यानी तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग और रणनीतिक तरीके से स्टोरी पेश करने की तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसका मकसद था किशोरों के स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर अधिक प्रभावी और जिम्मेदार पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जा सके। इस वर्कशॉप में पूरे भारत से वरिष्ठ संपादक, स्वास्थ्य पत्रकार, मीडिया एजुकेटर और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एक साथ आए। इसका उद्देश्य सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा पर तथ्यों पर आधारित, निरंतर और मानव-केंद्रित रिपोर्टिंग को मजबूत करना था। निस्संदेह, ये भारत की दो सबसे गंभीर, लेकिन कम रिपोर्ट की जाने वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियां हैं। प्रतिभागियों ने न्यूजरूम के भीतर की व्यवस्थागत बाधाओं की जांच की, गलत सूचनाओं का मुकाबला करने में मीडिया की भूमिका पर चर्चा की और साथ ही सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े आंकड़ों को लोगों की असली जिंदगी की कहानियों से जोड़ने के लिए रणनीतियां भी तैयार की।

यूनिसेफ की कम्युनिकेशन ऑफिसर सोनिया सरकार ने बताया कि 'एम्स' के प्रिवेंटिव ऑन्कोलॉजी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ पल्लवी शुक्ला; निमहंस के डब्ल्यूएचओ सहयोग केंद्र के प्रमुख डॉ गौतम एम सुकुमार और मध्यप्रदेश में यूनिसेफ के चीफ ऑफ़ फील्ड ऑफ़िसर अनिल गुलाटी ने भी वर्कशॉप में भाग लेने वाले संपादकों को संबोधित किया। उल्लेखनीय है कि प्रतिभागियों ने 6 संपादकीय समूहों में काम किया, ताकि किशोरियों के स्वास्थ्य, खासकर सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की बेहतर कवरेज के लिए न्यूजरूम की रणनीतियां तैयार की जा सकें। संपादकों ने यह भी पता लगाया कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स डेटा विश्लेषण, शोध अनुवाद और तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग में कैसे मदद कर सकते हैं। साथ ही वैज्ञानिक शोध को क्षेत्रीय और भाषाई मीडिया के लिए सुलभ बनाने के तरीकों पर भी चर्चा की गई।

यह वर्कशॉप 'क्रिटिकल अप्रेजल स्किल्स' फ्रेमवर्क के अंतर्गत आयोजित की गई थी, जो यूनिसेफ समर्थित पहल है। इसे 2014 में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन के साथ साझेदारी में शुरू किया गया था। उल्लेखनीय है कि प्रशिक्षित सलाहकार अब मास्टर ट्रेनर बनकर महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान और कर्नाटक में पत्रकारों के लिए राज्य स्तरीय वर्कशॉप आयोजित करेंगे। ये गलत सूचनाओं को दूर करने, रिपोर्टिंग की गुणवत्ता में सुधार करने और सर्वाइकल कैंसर और सड़क सुरक्षा पर जिम्मेदार, डेटा पर आधारित जानकारी को बढ़ावा देने के लिए भाषाई मीडिया की क्षमताओं को मजबूत करेंगे।

श्री श्री गौड़ ब्राह्मण महासभा धार और अभा शाश्वत गीता मंडल के तत्वावधान में गीता ज्ञान यज्ञ प्रारंभ

धार शहर में पहली बार हो रहा है अनूठा आयोजन

धार। श्री श्री गौड़ ब्राह्मण महासभा धार और अभा शाश्वत गीता मंडल के तत्वावधान में आज से विश्व विख्यात गीता मर्मज्ञ श्री श्री 1008श्री श्रीमत परमहंस परिव्राजकाचार्य अखंड पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर श्री निरंजनी अखाड़ा डॉ स्वामी शाश्वतानंद गिरीजी महाराज के श्रीमुख से श्री श्री गौड़ महालक्ष्मी मंगल परिसर में गीता ज्ञान यज्ञ

प्रारंभ हुआ। आयोजन 14 दिसंबर तक चलेगा इसमें स्वामी जी गीता के सभी श्लोकों की सरलतम शब्दों में व्याख्या करेंगे। व्याख्यान प्रति दिन दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक होंगे। अपने आप में अनूठा आयोजन जो धार शहर में पहली बार हो रहा है आप सब भी पधारकर धर्म लाभ लेवें।

प्रथम दिन गुरुजी ने गीता के महत्व को बताया। गुरुजी का स्वागत महासभा अध्यक्ष अनिल तिवारी, गीता मंडल के पिनाकीन बारोट, अरविंद डोड, मुख्य यजमान सुश्री ओम प्रभा दुबे,राधा दीदी, बी के चतुर्वेदी, अविनाश जोशी, पूर्व प्राचार्य सुरेश तिवारी, कपिल सोलंकी आदि ने किया। डॉ निलेश व्यास ने स्वस्ति वाचन किया।

डॉ. व्यास और केके दुबे को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

धार। मैजिक बुक ऑफ रिकॉर्ड,मैजिक एंड आर्ट यूनिवर्सिटी, फरीदाबाद दिल्ली एन सी आर के तत्वावधान में मानद डॉक्टरेट अवॉर्ड सम्मान समारोह में भोपाल के व्यंग्यकार अशोक व्यास और डॉ. कमल किशोर दुबे को हिन्दी साहित्य सृजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं विशिष्ट सेवा के लिए मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता मैजिक एंड आर्ट विश्वविद्यालय के चेयरमैन, कुलाधिपति एवं विश्वविख्यात मैजिशियन डॉ. सी.पी.यादव ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सीपीआर मास्टर ट्रेनर ऑफ अमेरिका तथा सेंट जॉन एम्बुलेंस इंडिया के उपायुक्त डॉ. राजेन्द्र सैनी ने की। उल्लेखनीय है कि डॉ. अशोक व्यास महारत्न कंपनी बीएचई एल के सेवानिवृत प्लानिंग इंजिनियर हैं। उनके तीन व्यंग्य संग्रह और पांच साझा व्यंग्य संग्रह और एक साझा कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस समारोह में विभिन्न राज्यों के एवं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय एवं विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाले वरिष्ठ साहित्यकारों, समाजसेवियों, संगीतकारों व शिक्षकों को भी इस अवसर पर मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया।

अंतर जिला अंडर 15 क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल धार व खंडवा के बीच होगा

धार। इंदौर डिविजनल क्रिकेट एसोसिएशन के निर्देश पर धार में अंतर जिला अंडर 15 क्रिकेट प्रतियोगिता के दूसरे दिवस में धार एवं बुरहानपुर के बीच खेला गया। धार की टीम को पहली पारी में बढ़त के आधार पर विजय घोषित किया गया। मैच के प्रारंभ पूर्व आज के

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हेमंत जी जाट ब्यूरो चीफ पत्रिका समाचार पत्र थे। हेमंत जी जाट का स्वागत संगठन के अध्यक्ष प्रदीप जोशी (कीका भाई) द्वारा किया गया। अतिथि द्वारा दोनों टीमों के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें अपने खेल में श्रेष्ठा प्राप्त करने के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की गई। इस अवसर पर क्रिकेट डेवलपमेंट कमेटी के अध्यक्ष अमिताभ विजयवर्गीय, पूर्व रणजी खिलाड़ी देवेंद्र परमार, धीरेंद्र दिघे,पंकज मुरमकर, मोइस रहमान, महेंद्र सुर्वे सहित आदि पदाधिकारी एवं खेल प्रेमी उपस्थित रहे। आज के मैच का मैन ऑफ द मैच धार के अथर्व राठौर को अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया।

वृद्धजनों को फिजियोथेरेपी के साथ मिली आवश्यक दवाइयां

धार। वृद्धजन अपने आप को स्वस्थ्य व कुशल रखने के लिए संतुलित आहार के साथ नियमित योग भी करते रहे। अच्छा लगा कि श्रद्धालय वृद्धाश्रम के अधिकांश वृद्धजनों का स्वास्थ्य बेहतर है। वृद्धावस्था की अपनी कुछ आयुगत परेशानियां हो सकती है पर समय पर आवश्यक दवाइयां लेकर लंबे समय स्वास्थ्य सुख अनुभूत किया जा सकता है। यह विचार महाराजा भोज जिला चिकित्सालय के एमडी मेडिसिन डॉ पूजाशा पाटीदार व दंत रोग विशेषज्ञ डॉ गौरव गुप्ता ने श्रद्धालय वृद्धाश्रम में आयोजित चिकित्सा शिविर में व्यक्त किए। संचालन संस्था भोज शोध संस्थान के निदेशक डॉ दीपेंद्र शर्मा ने आश्रम का अवलोकन करवाया।

आश्रम में उपस्थित सभी वृद्धजनों व सेवादारों का स्वास्थ्य परीक्षण करके आवश्यक दवाइयां भी निःशुल्क प्रदान की गई। फिजियोथेरेपिस्ट डॉ कीर्ति बघेल द्वारा फिजियो करवाई गई। जांच कार्य में सहयोग सुनीता गुप्ता, सुनील कुशवाह, रानी पंवार, विद्या गुंजाल व प्रिया सोलंकी का रहा। शुगर के मरीजों को आवश्यक भोजन में मिष्ठान पथ्य बताए गए। कुछ चर्मरोगी व अस्थिरोगियों को विशेष उपचार के लिए चयनित किया गया। आभार सत्कार अधिकारी जयंत जोशी ने व्यक्त किया। वृद्धजनों को फलाहार करवाया गया। जानकारी मीडिया प्रभारी राकी मक्कड़ ने दी।

ठंड से आक्रामक हो रहे कुत्ते, आवारा कुत्तों की वजह से लोगों में भय

10 महीने में 2338 लोग हुए डॉग बाइट के शिकार

बैतूल। जिले में डॉग बाइट के केस बढ़ रहे हैं। आवारा कुत्तों के काटने से लोगों में डर है। कुत्ते सडक़ों से लेकर गली-मोहल्लों के साथ सार्वजनिक स्थानों, चौक-चौराहों, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और स्कूल के आसपास सहित अन्य स्थानों पर घूमते रहते हैं। झुंड बनाकर वाहन चालकों पर लपकते है। पैदल चल रहे राहगीरों को काट रहे हैं। इसके बाद भी नगरपालिका द्वारा आवारा कुत्तों को सार्वजनिक स्थानों से हटाने के लिए कोई अभियान तक नहीं चलाया जा रहा है, जबकि रोजाना नागरिक डॉग बाइट का शिकार होकर जिला अस्पताल पहुंच रहे हैं। डॉक्टरों के अनुसार, सालभर औसतन 8 से 15 केस प्रतिदिन सामने आते हैं। जिला अस्पताल के आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी से लेकर अक्टूबर 2025 तक जिला अस्पताल में डॉग बाइट के करीब 2338 लोग शिकार होकर उपचार के लिए पहुंचे। डॉग बाइट के मामलों में राहत की बात यह है कि जिला अस्पताल में एंटी-रैबीज दवाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं और जिले की सभी सीएचसी में भी दवाएं भेज दी गई हैं। जहां डॉक्टर नहीं हैं, वहां भी कम से कम तीन वायल रखवाए गए हैं।

हर मौसम में कुत्तों के व्यवहार में आता है बदलाव – डॉक्टरों का कहना है कि हर मौसम में कुत्तों के व्यवहार में बदलाव आता है। जब कोई उनकी तय सीमा में प्रवेश करता है, तो वे उसे दुश्मन समझकर आक्रामक हो जाते हैं। इसी कारण डॉग बाइट के मामले बढ़ जाते हैं। हालांकि जिले में अब तक रैबीज से मौत की कोई पक्की खबर नहीं है। स्वास्थ्य विभाग का कहना है कि दवाओं की उपलब्धता और समय पर उपचार से मरीज सुरक्षित हैं। लेकिन आवारा कुत्तों की संख्या पर नियंत्रण न होने से डॉग बाइट का खतरा लगातार बना हुआ है। इसके बाद भी नगर पालिका प्रशासन डॉग कंट्रोल की दिशा में कारगर कदम नहीं उठा पा रहा है।

नसबंदी और कुत्तों को पकड़ने चार बार निकाले टैंडर, नहीं मिला ठेकेदार– जानकारी के अनुसार, कुत्तों की नसबंदी और पकडऩे के लिए नगरपालिका द्वारा चार बार टेंडर जारी किए जा चुके हैं, लेकिन कोई ठेकेदार सामने नहीं आया। अब फिर टेंडर निकाला है। नपा के सेनेटरी इंस्पेक्टर संतोष धनेलिया का कहना है कि किसी संस्था के आगे न आने के कारण नगरपालिका का अमला ही कुत्तों को पकडक़र शहर से 25-30 किमी दूर छोड़ रहा है, लेकिन वे फिर वापस आ जाते हैं। विश्वसनीय सूत्रों के अनुमान के मुताबिक शहर में आवारा कुत्तों की संख्या एक हजार से अधिक होने का अनुमान है। पिछले कुछ समय में कुत्तों की संख्या में लगातार इजाफा हुआ है, जिसकी मुख्य वजह नपा द्वारा कुत्तों की संख्या पर नियंत्रण नहीं किया जाना बताया जा रहा है।

आवारा कुत्तों से छोटे बच्चों को बड़ा खतरा– छोटे बच्चों के लिए आवारा कुत्ते ज्यादा बड़ा खतरा हैं। कुत्तों के लिए छोटे बच्चे आसान शिकार होते हैं। लेकिन नगर पालिका इन आवारा कुत्तों को नियंत्रण करने की ओर ध्यान नहीं दे रही है। यहां बता दें कि उच्च न्यायालय में लगाई गई एक अवमानना याचिका के संदर्भ में जारी न्यायालय के निर्देशों का हवाला देते हुए नगरपालिका आवारा पशुओं पर नियंत्रण करने के निर्देश राज्य शासन ने दिए थे। जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में इसके लिए समिति गठित की गई थी, लेकिन जनवरी 2017 से अब तक जिले के नगरपालिकाओं ने आवारा पशुओं खासकर कुत्तों की जनसंख्या नियंत्रण के लिए कोई ठोस काम नहीं किया। परिणाम स्वरूप कुत्तों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है।

आवारा कुत्तों से रैबिज का खतरा अधिक

जानकार बताते है कि आवारा कुत्तों में रैबिज का खतरा अधिक रहता है। ऐसे कुत्ते यदि किसी इंसान को काट ले और उसका समय पर इलाज न कराया जाये तो यह जानलेवा भी साबित हो सकता है। इधर कुछ पशुपालक भी कुत्तों को जरूर पालते है, लेकिन उन्हें समय पर टीका नहीं लगाते है या लापरवाही करते है। इस तरह की लापरवाही न सिर्फ अन्य लोगों के लिए घातक साबित होती है, बल्कि पालतू पशुओं, कुत्तों के लिए भी घातक है। जानकार बताते है कि यदि कुत्तों को समय-समय पर वैक्सीन लगाया जाये और इसके बाद कुत्ते किसी को काटते भी है तो रैबिज का खतरा कम रहता है। इसलिए पशुपालक को समय-समय पर टीका लगवाना चाहिए, अन्यथा पालतू कुत्तों को काटने की घटना के बाद पीड़ित इसकी शिकायत या मामला भी दर्ज करवा सकता है, जिससे कुत्ता पालकों को लंबे समय तक परेशानी उठानी पड़ सकती है।

10 माह में 2338 केस पहुंचे जिला अस्पताल

माह	केस
जनवरी	217
फरवरी	216
मार्च	225
अप्रैल	267
मई	257
जून	227
जुलाई	251
अगस्त	218
सितंबर	220
अक्टूबर	240
कुल	2338

इनका कहना है –

जिला अस्पताल में एंटी-रैबीज दवाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं और जिले की सभी सीएचसी में भी दवाएं भेज दी गई हैं।

– डॉ. जगदीश घोरे,
सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

नगर का मुख्य मार्ग अतिक्रमण की चपेट में, हर घंटे लगता है जाम

स्टेशन रोड और फव्वारा चौक बना पार्किंग स्थल

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी के मुख्य मार्ग अतिक्रमण की भेंट चढ़ गए हैं। नगर के मध्य से गुजरने वाले प्रमुख मार्ग के फुटपाथ पर या तो व्यापारियों ने कब्जा कर अपनी दुकान बढ़ा ली है या बचे हुए स्थान पर लोगों ने अतिक्रमण कर अपनी दुकानें सजा ली है। इसके अलावा भी अगर स्थान शेष रहता है, तो चार पहिया वाहनों का पार्किंग स्थल हो जाता है। यही नहीं अतिक्रमणकारी एवं वाहन पार्किंग करने वाले यह भी नहीं देखते है कि यह स्तंभ चौक राष्ट्रीय स्मारक है या फवारा चौक प्रमुख चौराहा यहां लगने वाली दुकान

पार्किंग समझकर खड़े किए चार पहिया वाहन कभी भी बड़ी दुर्घटना का कारण हो सकते हैं, किंतु इसके बावजूद भी नगर प्रशासन ने कभी इस और ध्यान नहीं दिया। फवारा चौक से स्टेशन मार्ग ने करोड़ों रुपए खर्च कर तासी परिक्रमा क्षेत्र का सौंदर्यीकरण किया है और अब मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग की बाउंड्री चार पहिया वाहन की पार्किंग स्थल के रूप में उपयोग होती है और बचे हुए स्थान पर फल, फरूट, चार्ट, आइसक्रीम सहीत अनेक दुकानें संचालित हो रही है दूसरी ओर व्यापारियों ने अपनी दुकाने अपनी दुकान से 10 फीट तक आगे बढ़ा ली है और आलम यह है कि यहां आए दिन जाम लगता है दो पहिया वाहन से गुजरा तक मुश्किल हो रहा है।

खर्च करो का हिस्सा बनकर रह गया फव्वारा चौक

फव्वारा चौक परिवर्तनशील फार्मूले सुंदर उदाहरण और इस परिवर्तन के नाम पर अब तक इस फवारा चौक पर लाखों रुपए खर्च किए जा चुके हैं। सर्वप्रथम इस फवारा चौक पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी रहे कस्तूरी साहब ने एक महिला की प्रतिमा लगाकर यहां फार्म लगाया था। इसके उपरांत इसे हटाकर नगर प्रशासक रहे प्रमोद गुप्ता ने या संगीत में फव्वारे का निर्माण किया इसके उपरांत जिए भारत करके कार्यकाल में इसे हटाकर यहां पर डामरीकरण करा दिया गया और इस प्रकार मार्ग के मध्य तिराहे का निर्माण हुआ। कुछ समय बात इस तरह को सेल्फी पॉइंट में बदल दिया गया देखरेख क्या भाव में यहां लगे पौधे खराब हो गए, तो नगर पालिका ने इसके बाद इसमें बदलाव करके आर्टिफिशियल फ्लावर लगा दिए कुछ समय बाद इसे हटाकर यहां लाइटिंग कर दी गई और आज इस तरह पर बजरंग दल का बोर्ड लगा है और इसके आसपास वाहनों की पार्किंग हो गई है या अतिक्रमण कर लोग यहां अपनी दुकाने लगाते हैं।

स्मृति भवन से लेकर फव्वारा चौक तक लगता है जाम

नगर के मध्य से होकर गुजरने वाले नगर के प्रमुख मार्ग स्मृति भवन मासोद तिराहे से फव्वारा चौक तक यातायात की समस्या दिन प्रतिदिन अत्यंत चिंताजनक होते जा रही है। हर घंटे जाम लगता है और इसका मुख्य कारण व्यापारियों का फुटपाथ पर अतिक्रमण और उसके बाद ग्राहकों के वाहनों का मुख्य मार्ग पर खड़ा रहना है। देश के अन्य शहरों में जहां फुटपाथ पैदल चलने के लिए होता है, हमारे यहां फुटपाथ अतिक्रमण करने के लिए है। पुलिस थाने के सामने मुख्य मार्ग का फुटपाथ पर व्यापारियों कब्जा है। इसके उपरांत माल भरने और खाली करने के लिए यह बड़े वाहन भी घंटो खड़े रहते हैं और साथ ही ग्राहकों की दो पहिया वाहन भी ऐसी स्थिति में आए दिन दुर्घटना होती है विवाद होते हैं, किंतु नगर प्रशासन को शायद किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार है।

इनका कहना है –

अभी नगर पालिका अतिक्रमण हटाने को लेकर कोई विशेष अभियान तो नहीं चलने वाली किंतु नगर पालिका की रेगुलर टीम को भेजा कर अतिक्रमण हटाने का प्रयास किया जाएगा।

–योगेश अनेराव, उपयंत्री, नगरपालिका मुलताई

आरबीएसके कार्यक्रम के तहत 5 हृदय रोग के बच्चों को उपचार के लिए किया भोपाल रवाना

बैतूल। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत मंगलवार को चिन्हांकित 5 बच्चों को ह्रदय रोग चिकित्सा उपचार के लिए भोपाल रवाना किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि एक बच्चे को अनंत हार्ट हास्पिटल भोपाल, एक को चिरायू हास्पिटल भोपाल एवं तीन बच्चों को एलएन मेडिकल कॉलेज एवं जेके हॉस्पिटल भोपाल भेजा गया, जहां उनकी निःशुल्क सर्जरी आरबीएसके कार्यक्रम एवं आयुष्मान भारत निरामयम योजना के अंतर्गत की जाएगी। उन्होनें एम्बुलेंस में बच्चों के रवाना होने के पूर्व परिजनों से चर्चा की एवं परिजनों को आश्वस्त किया कि ऑपरेशन पश्चात बच्चे जल्दी ही स्वस्थ हो जाएंगे। सीएमएचओ डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े एवं सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ जगदीश घोरे द्वारा एम्बुलेंस वाहन को हरी झण्डी देकर रवाना किया गया। बच्चों को आरबीएसके मैनेजर योगेन्द्र दवंडे की देखरेख में ऑपरेशन के लिए भिजवाया गया।

अंतिम पात्र व्यक्ति को मिले शासन की जनहितैषी योजनाओं का लाभ : प्रभारी कलेक्टर श्री जैन

प्रभारी कलेक्टर ने जनसुनवाई में सुनीं नागरिकों की समस्याएं

बैतूल। बैतूल प्रभारी कलेक्टर अक्षत जैन ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में प्रातः 11 बजे से आयोजित जनसुनवाई में नागरिकों की समस्याएं गंभीरतापूर्वक सुनीं। इस दौरान उन्होंने अनेक समस्याओं का निराकरण मौके पर ही किया। जनसुनवाई में बैतूल सदर निवासी दिनेश कुबड़े ने हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में निर्माणाधीन नाले के जीर्णोद्धार किए जाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर प्रभारी कलेक्टर श्री जैन ने नगर पालिका सीएमओ को संबंधित उपयंत्री से स्थल निरीक्षण कराकर तत्काल कार्य आदेश अनुसार वेंडर से निर्माण कार्य कराए जाने के निर्देश दिए। बैतूल कोठीबाजार निवासी ममता खडसे ने आवास योजना का लाभ दिलाए जाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर ने नगर

पालिका अधिकारी को आवास योजना का लाभ दिलाए जाने के निर्देश दिए। प्रभारी कलेक्टर श्री जैन ने कहा कि शासन की जनहितैषी योजनाओं का लाभ अंतिम पात्र व्यक्ति को मिले यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का संबंधित अधिकारी समय सीमा में निराकरण करें, ताकि आवेदकों को दोबारा अपनी समस्या के निराकरण के लिए जनसुनवाई में न आना पड़े। इस अवसर पर अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनी। जनसुनवाई में सभी विभागीय, अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

चतुर सीमा नापवाने के दिए निर्देश– जनसुनवाई में मुलताई तहसील के ग्राम सर्रा निवासी दीनू बारपेटे ने आवेदन के माध्यम से अनावेदक द्वारा रास्ता बंद किए जाने की शिकायत की। जिस पर कलेक्टर ने एसडीएम मुलताई को प्रकरण की जांच कर निराकरण के निर्देश दिए। मुलताई तहसील के ग्राम एनखेड़ा निवासी मानिकराव बनकर ने चतुर सीमा नापवाने के लिए आवेदन दिया। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर ने मुलताई तहसीलदार को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। इसके अलावा मुलताई निवासी महादेव देवीराम द्वारा डायवर्सन आदेश पर हस्ताक्षर दिलवाए जाने के आवेदन पर कलेक्टर ने मुलताई एसडीएम को प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए।

मन की एकाग्रता से स्वयं कदम चूमती है सफलता : डी.डी. उइके

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में मनाया जनजातीय पखवाड़ा और अलंकरण समारोह

बैतूल। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, बैतूल के प्रांगण में सोमवार को जनजातीय पखवाड़ा एवं भगवान बिरसा मुंडा जयंती समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद (लोकसभा) एवं राज्य मंत्री, जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार डीडी उइके थे। सर्वप्रथम स्काउट-गाइड की कलर पार्टी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। डी.डी. उइके ने दीप प्रज्वलित कर माँ सरस्वती और भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विद्यालय के प्राचार्य आरएन पांडेय ने मंत्री डी.डी. उइके का शाल, श्रीफल और पौधा भेंटकर हरित स्वागत किया तथा विशेष अतिथि अमिता पांडेय का भी हरित स्वागत किया गया। इस अवसर पर छात्र श्रेयांश प्रजापति ने मंत्री का बनाया हुआ सुंदर पोर्ट्रेट उन्हें भेंट किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना, स्वागत गीत, लघु नाटिका, लोकनृत्य और वंदे मातरम् की आकर्षक प्रस्तुतिया दीं। अलंकरण समारोह में मंत्री डी.डी. उइके ने शाला नायक यश और उर्वशी सहित चारों सदनों शिवाजी, टैगोर,

अशोक और रमन के सदन नायकों को बैज लगाकर सम्मानित किया। मंत्री ने विद्यालय के इंटरएक्टिव पैनल का शुभारंभ किया और कला प्रदर्शनी व प्राथमिक विभाग की टी.एल.एम. प्रदर्शनी का अवलोकन किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि भगवान राम और पांडवों के वनवास काल में जनजातीय समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा, सरदार विष्णु सिंह गौड़ और सरदार गंजन सिंह कोरकू के योगदान को स्मरण किया और कहा कि आदिवासी समाज प्राचीन काल से ही जड़ी-बूटियों के माध्यम से मानव सेवा में अग्रणी रहा है। कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए डी.डी. उइके ने कहा, मन की एकाग्रता से लौकिक एवं पारलौकिक सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। मेहनत ऐसी होनी चाहिए कि सफलता स्वयं आपके कदम चूमे। किस्मत के भरोसे नहीं रहना चाहिए; जब पढ़ाई करें तो केवल पढ़ाई ही दिखनी चाहिए। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ शिक्षिका अर्पिता हजारे ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य अध्यापक भारत धोटे, रमेश पंडोले, उदय प्रताप सिंह, जगदीश लोखंडे, ए.आर. डांगे, सीमा साहू सहित सभी शिक्षकों का विशेष योगदान रहा। शाला नायकों को पद एवं कर्तव्यपरायणता की शपथ संजय सोनी ने दिलाई। पूरे कार्यक्रम का कुशल संचालन हिंदी विभाग के शिक्षक दिलीप डांगे ने किया।

विशेष लेख

सय्यद असीम अली

पत्रकार

भोपाल तब्लीग इज्तिमा : 77 साल की इबादत, खिदमत और भाईचारे की मिसाल

स्थानीय परिवारों की सेवा और उलेमाओं के मार्गदर्शन ने बनाया इसे दुनिया का बड़ा धार्मिक आयोजन

तब्लीग इज्तिमा, जिसे 'आलमी तब्लीग इज्तिमा' भी कहा जाता है, दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक जमावड़ों में से एक है। यह केवल एक वार्षिक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि दुनिया भर के मुसलमानों के लिए भाईचारे, आत्मसुधार और सेवा का मंच है। भोपाल को इस आयोजन ने एक विशेष पहचान दी है। 1949 में एक छोटी सी सभा से शुरू हुआ यह इज्तिमा आज 10 लाख से ज़्यादा लोगों को एक साथ जोड़ने वाला आयोजन बन चुका है।

शुरुआत और विकास: मस्जिद से मैदान तक का सफर

भोपाल इज्तिमा की कहानी 1949 से शुरू होती है, जब पुराने शहर की मस्जिद शाकूर खां में कुछ उलेमा और स्थानीय मुसलमानों ने धार्मिक चर्चा और आत्मसुधार के उद्देश्य से एक छोटी सी सभा आयोजित की। यह आयोजन धीरे-धीरे लोकप्रिय होता गया और जल्द ही इसकी भीड़ मस्जिद की सीमाओं से बड़ी हो गई।

बढ़ते आकार और प्रभाव को देखते हुए कार्यक्रम को ताजुल मस्जिद परिसर में स्थानांतरित किया गया। यहाँ से यह इज्तिमा राष्ट्रीय पहचान प्राप्त करने लगा। लेकिन जैसे-जैसे देश और विदेश से आने वाले लोगों की संख्या बढ़ती गई, 2005 में आयोजन स्थल को शहर से बाहर ईंटखेड़ी / घासीपुरा के विशाल मैदान में ले जाया गया, जहाँ 150 एकड़ से अधिक भूमि पर इसकी व्यवस्था होती है।

आज इज्तिमा का कार्यक्रम चार दिनों तक चलता है– शुक्रवार की फ़जर की नमाज़ से शुरू होकर सोमवार की दुआ-ए-खास पर समाप्त। इस दौरान लाखों लोग जमा होते हैं और दुनिया भर से आई जमातें इसमें शरीक होती हैं।

दशक-दर-दशक: विकास की शानदार यात्रा

भोपाल तब्लीगी इज्तिमा की यात्रा इसकी निरंतर प्रगति, सेवा और एकता की प्रतीक रही है।

1950 के दशक में इसकी शुरुआत मस्जिद शाकूर खां में सीमित प्रतिभागियों के साथ हुई, जहाँ स्थानीय सभाओं और आध्यात्मिक संदेशों पर विशेष ध्यान दिया गया।

1960-70 के दशक में इज्तिमा का आयोजन ताजुल मस्जिद में स्थानांतरित हुआ, जिससे इसे देशभर में पहचान मिली और विभिन्न राज्यों से जमातें आने लगीं।

2000 के दशक में वर्ष 2005 में आयोजन स्थल को ईंटखेड़ी के विशाल मैदानों में स्थानांतरित किया गया, जिससे प्रबंधन और व्यवस्था अधिक संगठित और वैज्ञानिक रूप में विकसित हुई।

2020 के दशक में कोविड-19 महामारी के कारण आयोजन में अस्थायी विराम आया, लेकिन 2023-24 में रिकॉर्ड भागीदारी के साथ यह फिर नई ऊँचाइयों पर पहुँचा। आगामी 2025 इज्तिमा (14-17 नवंबर) के लिए और भी अधिक उत्साह और व्यापक भागीदारी की उम्मीद की जा रही है।

यह यात्रा दर्शाती है कि कैसे भोपाल का इज्तिमा एक सीमित स्थानीय आयोजन से विकसित होकर आज धार्मिक, सामाजिक और मानवीय एकता का वैश्विक प्रतीक बन चुका है।

हज़रत मौलाना साद और मौलवियों का अमूल्य योगदान

हज़रत मौलाना साद, तब्लीग जमात के शीर्ष वक्ताओं में से एक, भोपाल इज्तिमा में मुख्य प्रवचन देने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके भाषण सरल, सजीव और भावनाओं से भरे होते हैं, जो श्रोताओं के दिलों को छू जाते हैं। वे केवल धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाजिक एकता, नैतिक मूल्यों और व्यक्तिगत सुधार पर भी जोर देते हैं।

भोपाल इज्तिमा में उनकी उपस्थिति लाखों अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होती है। उनके प्रवचनों में ईमान की मजबूती, सेवा और समाज में भलाई जैसे विषय प्रमुख होते हैं। हज़रत मौलाना साद का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि लोगों के दिलों में अच्छाई और ईमान के बीज बोना है। उनकी बातें देश और विदेश से आए लोगों पर गहरी छाप छोड़ती हैं और इज्तिमा के आध्यात्मिक वातावरण को और भी समृद्ध बनाती हैं। ऐसे वक्ता समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रेरणा देने वाले होते हैं।

हज़रत मौलाना साद और अन्य प्रमुख मौलवियों का योगदान केवल भाषण तक सीमित नहीं है। वे आयोजन की योजना बनाने, व्यवस्थाओं का प्रबंधन करने, शिक्षा और प्रशिक्षण देने, और बाहर जाने वाली 'जमातों' के गठन में भी सक्रिय रहते हैं। उनके मार्गदर्शन से हर प्रतिभागी न केवल धार्मिक संदेश समझता है, बल्कि उसे अपने जीवन में लागू करने का उत्साह भी प्राप्त करता है। इस प्रकार, उनका योगदान इज्तिमा को सफल, प्रभावशाली और प्रेरक बनाता है।

युवाओं के प्रेरक वक्ता: हज़रत मौलाना साद के पुत्र

भोपाल तब्लीग इज्तिमा में युवाओं को धार्मिक संदेश पहुंचाने में हज़रत मौलाना साद के पुत्रों का योगदान अनमोल है। उनके बड़े बेटे मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ भाषण और मार्गदर्शन के माध्यम से युवाओं के दिलों तक पहुंचते हैं। दूसरे बेटे मौलाना मोहम्मद सईद और तीसरे बेटे मौलाना मोहम्मद इल्यास भी युवा पीढ़ी के बीच बेहद लोकप्रिय वक्ता हैं।

तीनों बेटे मिलकर युवा प्रतिभागियों को धर्म, सेवा, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करते हैं। उनकी ताकत यह है कि वे युवाओं की भाषा और दृष्टिकोण को समझते हैं, और उसी अनुसार संदेश देते हैं। यही वजह है कि युवा इज्तिमा में उनके भाषणों को बड़ी श्रद्धा और लगन से सुनते हैं।

उनकी यह महारत, युवा पीढ़ी को सही दिशा देने और उन्हें जीवन में सकारात्मक मूल्यों की ओर प्रेरित करने में बेहद महत्वपूर्ण साबित होती है। इस तरह, मौलाना साद के पुत्र इज्तिमा के युवा वर्ग के असली मार्गदर्शक बने हैं।

भोपाल के प्रमुख घराने और स्थानीय योगदान

भोपाल तब्लीगी इज्तिमा को आज जो अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त है, उसके पीछे शहर के धार्मिक, शैक्षिक और समाजसेवी घरानों का अदृश्य योगदान है। इन परिवारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे हर तरह से मदद करते हैं, मगर अपने नाम को प्रचार में नहीं लाते। इज्तिमा में सेवा और सहयोग की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उनके द्वारा टेंट की संपूर्ण व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती रही है। यह व्यवस्था हज़ारों प्रतिभागियों के ठहराव, बैठक और कार्यक्रम संचालन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।सेवा के इस अनोखे भाव ने समाज में सहयोगात्मक संस्कृति और भाईचारे का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। इज्तिमा की सेवा की मिसाल यह है कि कुछ परिवारों ने अपनी ज़मीनें इस आयोजन के लिए समर्पित कर दी हैं। कई लोग अपनी निजी भूमि इस उद्देश्य के लिए उपलब्ध कराते हैं, जबकि कुछ परिवारों ने अपनी ज़मीन इज्तिमा के लिए ही वक्फ कर दी है, ताकि इस महान आयोजन में कभी कोई बाधा न आए और मुसाफ़िरों को सहूलियत मिलती रहे।

यह जज़्बा सिर्फ़ जगह देने का नहीं, बल्कि इल्म, मोहब्बत और खिदमत की परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रतीक है। कोई आवास उपलब्ध कराता है, कोई खाने-पीने का इंतज़ाम करता है तो कोई यातायात और मार्गदर्शन की व्यवस्था करता है। यह सब कार्य बिल्कुल ख़ामोशी, निस्वार्थ भाव और बिना किसी लाभ के किया जाता है। उनका मानना है कि उनके पूर्वजों ने जान, माल और समय लगाकर इस आयोजन को खड़ा किया, इसलिए यह उनकी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि उसी नियत से इसे आगे बढ़ाया जाए।

इन परिवारों की नई पीढ़ी भी पूरे उत्साह और समर्पण से इस खिदमत में लगी हुई है। उदाहरण के तौर पर, कुछ धार्मिक घराने मस्जिदों, वजूखानों और नमाज़ स्थलों के रख-रखाव में सक्रिय रहते हैं। शैक्षिक परिवार अपने स्कूलों, कॉलेजों या हॉस्टलों को अस्थायी आवास व कक्षाओं को सामूहिक दावत के लिए खोल देते हैं। कई व्यापारी व कारोबारी परिवार भोजन, पानी और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वित्तीय व सामग्री सहयोग देते हैं। वहीं समाजसेवी संस्थाएँ यातायात प्रबंधन, मार्गदर्शन व सुरक्षा व्यवस्था संभालती हैं।

यह सामूहिक प्रयास न केवल आयोजन को व्यवस्थित बनाता है, बल्कि भोपाल की मेहमाननवाज़ी, सामाजिक सहयोग और पारिवारिक परंपराओं को भी उजागर करता है। यही कारण है कि हर साल यहाँ आने वाले मेहमान केवल धार्मिक वातावरण ही नहीं बल्कि एक जीवंत सामाजिक समर्पण का अनुभव भी लेकर लौटते हैं।

इस प्रकार भोपाल के प्रमुख घरानों और स्थानीय समाज का यह मौन योगदान इस इज्तिमा को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनता है।

प्रशासन की सतर्कता और सहयोग का अनूठा उदाहरण

भोपाल तब्लीगी इज्तिमा की सफल व्यवस्था प्रशासन की सक्रिय भूमिका के बिना संभव नहीं है। लाखों की भीड़ के बीच सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और यातायात के लिए बारीक योजना और समन्वय आवश्यक है।

मुख्यमंत्री से लेकर मुख्य सचिव तक की सीधी निगरानी रहती है। पुलिस, स्वास्थ्य, रेलवे,नगर निगम और आपदा प्रबंधन विभाग विस्तृत योजनाएँ बनाकर उन्हें ज़मीन पर लागू करते हैं। इस समन्वित प्रयास के कारण, भारी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय भीड़ के बावजूद कार्यक्रम शांतिपूर्ण, सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से संपन्न होता है।प्रशासन की सतत निगरानी और संवेदनशीलता ने इज्तिमा को प्रदेश की 'शांति और सेवा' की पहचान देने में अहम योगदान दिया है।

स्वयंसेवक: इज्तिमा की रीढ़,चुनौतियों पर हमेशा खरे उतरे

भोपाल तब्लीग इज्तिमा में लगभग 30,000 स्वयंसेवक दिन-रात लोगों की खिदमत में लगे रहते हैं। वे कठिनाइयों का सामना करते हुए आयोजन को और अधिक सुचारू, व्यवस्थित और सकारात्मक बनाते हैं। चौबीस घंटे लगातार सेवा करना और हर व्यक्ति की जरूरतों का ध्यान रखना इस इज्तिमा की असली ताकत है। यही समर्पण और मेहनत इसे खास बनाती है। भोपाल का यह खिदमत अंदाज़ अलामी तब्लीगी इज्तिमा को सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में प्रतिष्ठित बनाता है। स्वयंसेवकों की निस्वार्थ सेवा और भाईचारे का संदेश आयोजन को एक प्रेरणादायक मंच बनाता है। उनका प्रयास न केवल आयोजन को सफल बनाता है, बल्कि सेवा, अनुशासन और एकता की मिसाल भी पेश करता है। यही वजह है कि इज्तिमा हर साल लोगों को भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से जोड़ने में सक्षम होता है।

भोपाल तब्लीग इज्तिमा एक विशाल आयोजन है, जिसमें लाखों लोगों की भागीदारी होती है। इतने बड़े जनसमूह के बीच व्यवस्थाएँ बनाए रखना आसान नहीं, लेकिन हर साल तब्लीगी स्वयंसेवक इन चुनौतियों पर पूरी तरह खरे उतरते हैं। भीड़ और यातायात के बीच प्रशासन और पुलिस के सहयोग से स्वयंसेवक मार्गदर्शन करते हैं और लोगों को सही दिशा में ले जाते हैं, जिससे आयोजन शांतिपूर्ण रहता है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य की जिम्मेदारियाँ भी इन्हीं स्वयंसेवकों के कंधों पर होती हैं। पानी, शौचालय, वजूखाने और प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाएँ समय पर उपलब्ध कराई जाती हैं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी उन्होंने ग्रीन थीम अपनाई और सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध का पालन सुनिश्चित किया।

दुआ-ए-ख़ास: अमन, चैन और भाईचारे की दुआ

भोपाल तब्लीग इज्तिमा के अंतिम दिन आयोजित 'दुआ-ए-ख़ास' इज्तिमा की सबसे भावनात्मक और महत्वपूर्ण घड़ी होती है। इस मौके पर हज़रत मौलाना साद अत्यंत भावुक अंदाज़ में दुआ करते हैं, जिससे लाखों लोग भी भावनाओं में डूब जाते हैं। जब विशाल जमावड़ा एक साथ हाथ उठाकर दुआ करता है, तो पूरे माहौल में शांति, आध्यात्मिक ऊर्जा और एकता का अनुभव होता है। यह दुआ केवल व्यक्तिगत भलाई या किसी विशेष समुदाय के लिए नहीं होती, बल्कि पूरे प्रदेश, देश और दुनिया में अमन, चैन और भाईचारे की कामना के लिए होती है। उलेमा अपने शब्दों से इंसानियत, करुणा और सेवा का संदेश देते हैं, जो हर दिल को छू जाता है।पूरे शहर में त्योहार जैसा माहौल होता है, लोग नए कपड़े पहनते हैं और पूरे उत्साह से इस दुआ में शामिल होकर अल्लाह से रहमत की इल्तिजा करते हैं। यह पल यह याद दिलाता है कि धर्म का असली मकसद केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि मानवता की सेवा और शांति का प्रचार है। दुआ-ए-ख़ास लोगों के दिलों को जोड़ती है और उन्हें एक बेहतर, न्यायपूर्ण, सहनशील और समर्पित समाज बनाने की प्रेरणा देती है। यही अद्भुत अनुभव भोपाल तब्लीग इज्तिमा को धार्मिक ही नहीं, बल्कि मानवीय और सामाजिक दृष्टि से भी अनोखा और प्रेरक बनाता है।

आस्था, सेवा और एकता का जीवंत उदाहरण

आज भोपाल तब्लीगी इज्तिमा 77 वर्षों से अधिक की सतत मेहनत, आस्था और भाईचारे का जीवंत उदाहरण है। विद्वानों के भाषण, स्थानीय परिवारों की सेवा और प्रशासन व स्वयंसेवकों की मेहनत ने मिलकर इसे दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक बना दिया है।

यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान भी है। यह शांति, सेवा और एकता का संदेश लेकर चलता है और यह याद दिलाता है कि सच्ची आस्था करुणा, अनुशासन और सामूहिक भलाई को बढ़ावा देती है।

जैसे ही भोपाल 2025 के इज्तिमा की तैयारियाँ करता है, शहर एक बार फिर दुनिया को खुले दिल से स्वागत करने के लिए तैयार हो रहा है–न केवल आध्यात्मिक अनुभव देने के लिए बल्कि सहयोग, मेहमाननवाज़ी और मानवीय एकजुटता का जीवंत पाठ पढ़ाने के लिए भी।

एमएलबी स्कूल में जेईई तथा नीट की निःशुल्क कोचिंग की कार्यशाला अयोजित

बैतूल (निप्र)। शिक्षा विभाग एवं आदिम जाति कल्याण विभाग के सभी शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जहां पर गणित एवं जीव विज्ञान विषय संचालित हैं ऐसी शालाओं में जेईई तथा नीट परीक्षा 2026 की तैयारी के सुचारू संचालन के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन पीएम श्री शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल में किया गया। इस कार्यशाला में गणित एवं जीव विज्ञान विषयों की प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक शालाओं मे बनाए गए। जेईई तथा नीट शाला प्रभारी ने अपनी सहभागिता की। जिला जेईई तथा नीट प्रभारी एवं प्राचार्य नीलेश्वर कालभोर ने बताया कि शासकीय शालाओं में विगत तीन वर्षों से संचालित निःशुल्क जेईई तथा नीट कोचिंग के तारतम्य में सत्र 2025-26 में संचालित की जा रही निःशुल्क कोचिंग के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश एवं वर्ष 2026 में आगामी जेईई तथा नीट परीक्षा की तैयारी के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई । सर्वप्रथम कार्यशाला का शुभारंभ मां सरस्वती के छाया चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पूजन अर्चन के साथ किया गया। इस अवसर पर जिला स्तरीय जेईई तथा नीट समिति के सभी विषय प्रभारी एवं जिले के समस्त विकासखंड के जेईई तथा नीट प्रभारी उपस्थित रहे। कोचिंग प्रभारी प्राचार्य नीलेश्वर कालभोर ने विगत तीन वर्षों से संचालित निःशुल्क कोचिंग की सफलता की कहानी बताते हुए जेईई तथा नीट परीक्षा के लिए कार्यशाला में आए शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को इस वर्ष की निःशुल्क कोचिंग के सफल संचालन के टिप्स दिये। विगत तीन वर्षों से स्वप्रेरणा एवं स्वस्फूर्त भावना से निस्वार्थ भाव से सहयोगी सभी जेईई तथा नीट शाला प्रभारी को धन्यवाद देते हुए बताया कि सभी के प्रयास से हमारे शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी देश एवं प्रदेश के प्रतिष्ठित विभिन्न इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पा रहे है। इसी तरह इस वर्ष भी निःशुल्क कोचिंग में सहयोग एवं बेहतर परिणाम की अपेक्षा की। उन्होंने बताया कि जेईई तथा नीट की निःशुल्क कोचिंग का कार्यक्रम जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाहा के मार्गदर्शन में कुशलता पूर्वक किया जा रहा है।

कठिन अवधारणा को हल करने के सरल सूत्र बताएं

जिला गणित विषय प्रभारी भोजराज पोर्टफोड़े ने जेईई परीक्षा 2026 में आवेदन करते समय रखी जाने वाली सावधानी , परीक्षा पैटर्न, परीक्षा तिथि तथा परीक्षा परिणाम की प्रक्रिया के बारे में विस्तृत विवरण दिया। जीव विज्ञान विषय जिला प्रभारी घनश्याम वरवडे ने नीट की परीक्षा में आवेदन की प्रक्रिया तथा आवेदन के संबंध में रखी जाने वाली सावधानी, परीक्षा की प्रक्रिया तथा तिथि उसके परीक्षा परिणाम के विषय में विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि इसी निःशुल्क जेईई तथा नीट कोचिंग से किस प्रकार हम विद्यार्थियों को एमबीबीएस , बीडीएस तथा अन्य पैरामेडिकल कोर्स में शासकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाने में सफल हुए हैं। भौतिक शास्त्र विषय जिला प्रभारी मदन गोपाल सूर्यवंशी नें भौतिक शास्त्र विषय का जेईई में महत्व बताते हुए उसकी कठिन अवधारणा को हल करने के सरल सूत्र बताएं। रसायन शास्त्र विषय जिला प्रभारी उमेश कुमार शर्मा ने जेईई तथा नीट परीक्षा में क्वालीफाई होने वाले विद्यार्थियों की काउंसलिंग की प्रक्रिया को बताते हुए अच्छे इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए महत्वपूर्ण टिप्स दिए। उन्होंने निःशुल्क जेईई तथा नीट कोचिंग में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जिला स्तरीय पांच सदस्यों समिति के मार्गदर्शन से अच्छे कॉलेज मिलने के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। उल्लेखनीय है कि विगत तीन वर्षों से संचालित इस कोचिंग के बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं।

कोचिंग की व्यवस्थित सुचारू संचालन के लिए प्रत्येक विकासखंड पर विकासखंड प्रभारी बनाए गए हैं। आमला विकासखंड से प्रदीप कुमार नागले, आठनेर विकासखंड से कैलाश डोंगरे, बैतूल विकासखंड से संजय निरापुरे, भीमपुर विकासखंड से ओमप्रकाश शेंद्रे, भैसदेही विकासखंड से इंद्रजीत कवड़े, चिचोली विकासखंड से नरेंद्र पवार, घोड़ाडोंगरी विकासखंड से प्रवीण कुमार शर्मा ,मुलताई विकासखंड से प्रदीप कुमार कुबड़े ,प्रभात पट्टन विकासखंड से श्रीमती विजय पोफले तथा शाहपुर विकासखंड से राजेश कुमार नामदेव, जेईई तथा नीट विकासखंड प्रभारी बनाए गए हैं। सभी विकासखंड प्रभारी ने भी कार्यशाला में अपने विकासखंड में अध्यापन कराने के अनुभव साझा किए। कार्यशाला मे 10 विकासखंड के 130 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के जेईई तथा नीट शाला प्रभारी ने अपनी सहभागिता दी। कार्यशाला के लिए व्यवस्था पीएम श्री शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल के प्रभारी प्राचार्य भालचंद पांडे ने की। कार्यशाला का सफल संचालन शिक्षक हीरेंद्र शुक्ला ने किया।

टेस्ट पेपर्स को सभी विद्यार्थियों तक उपलब्ध कराने के निर्देश

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल कुशवाहा ने बताया कि जेईई तथा नीट की निःशुल्क कोचिंग का नवाचार मध्य प्रदेश में बैतूल जिले में सर्वप्रथम किया गया है , जिसकी सराहना राज्य स्तर से भी की जा चुकी है। इस नवाचार से शासकीय शाला के विद्यार्थी खासकर दूरस्थ स्थित शासकीय शाला के विद्यार्थियों को जो आर्थिक रूप से कमजोर है बहुत अधिक लाभ मिला है तथा वे सीमित संसाधनों में प्रदेश तथा देश के प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कॉलेज जैसे संस्थानों में प्रवेश पा रहे हैं। इस कार्यक्रम के सुचारू संचालन में कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी तथा सीईओ जिला पंचायत श्री अक्षत जैन का मार्गदर्शन सदैव उत्साह एवं ऊर्जा संचार का स्रोत रहा है। उन्होंने जिले भर की विभिन्न शाला से आए शाला जेईई तथा नीट प्रभारी को अपने उत्साहवर्धन करने वाले भाषण में प्रेरक सूत्र बताएं, जिससे वे इस वर्ष भी अपना सहयोग प्रदान कर पुनः जेईई तथा नीट तथा जैसी कठिन परीक्षा में विद्यार्थियों को सफल करने में कारगर होंगे। उन्होंने जिला स्तर से भेजे जा रहे टेस्ट पेपर्स को सभी विद्यार्थियों तक उपलब्ध कराने , हल कराने तथा मूल्यांकन कर डाटा संकलित करने के शिक्षकों को निर्देश दिए।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर ने छात्रावासों का किया निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण तथा विमुक्त घुमंतु-अर्धघुमंतु कल्याण विभाग की राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर का शनिवार को बैतूल आगमन हुआ। एक दिवसीय प्रवास के दौरान उन्होंने पिछड़ा वर्ग छात्रावासों का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं की सराहना की। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने पिछड़ा वर्ग कन्या छात्रावास बैतूल का निरीक्षण किया, जहां रिनोवेशन कार्यों को मॉडल छात्रावास के रूप में विकसित किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान उन्होंने छात्राओं के कक्ष, वाई-फाई सुविधा, सोलर सिस्टम, सीसीटीवी कैमरा, उच्च गुणवत्ता की खेल एवं जिम सामग्री, मॉड्यूलर किचन तथा सुरक्षित बाउंड्री वॉल जैसी व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। इसके बाद राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने पिछड़ा वर्ग पोस्ट मैट्रिक बालक छात्रावास हमलापुर का भी निरीक्षण किया और छात्रों से चर्चा की। छात्रावास की स्वच्छता और सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने विभाग के सहायक संचालक श्री नरेंद्र कुमार गौतम की सराहना की। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष श्री सुधाकर पवार सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

महिला क्रिकेट टूर्नामेंट का किया शुभारंभ : अपने प्रवास के दौरान राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने टिकारी स्थित एनसीए क्रिकेट मैदान में पंख संस्था द्वारा आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर टूर्नामेंट का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में केंद्रीय जनजातीय कार्य राज्यमंत्री एवं सांसद श्री दुर्गादास उइके, बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल, श्रीमती माया नारोलिया, श्री सुधाकर पवार सहित अन्य उपस्थित रहे।

गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति के लिए एमपी ट्रांसको का महत्वपूर्ण कदम

बैतूल जिले के 8 सबस्टेशनों सहित प्रदेश के 412 सबस्टेशनों में कैपेसिटर बैंक स्थापित

बैतूल (निप्र)। उपभोक्ताओं को मानक वोल्टेज पर गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने की दिशा में मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी एम.पी. ट्रांसको ने महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। बैतूल जिले के 8 सब स्टेशनों सहित प्रदेश मे कंपनी के 417 सबस्टेशनों में से 412 पर विभिन्न क्षमताओं के कैपेसिटर बैंक स्थापित किए गए हैं। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने एमपी ट्रांसको की इस उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि कैपेसिटर बैंकों की व्यवस्था से प्रदेशवासियों को उच्च गुणवत्ता और स्थिर वोल्टेज पर बिजली आपूर्ति संभव हो रही है।

बैतूल जिले में इन स्थानों पर स्थापित है कैपेसिटर बैंक

बैतूल जिले में के व्ही 220 के व्ही सबस्टेशन बैतूल में 12 एमव्हीएआर क्षमता का कैपेसिटर बैंक,220 के व्ही सबस्टेशन गुडगाँव में 12 एम व्ही ए आर

क्षमता का कैपेसिटर बैंक, 132 केवी सबस्टेशन बैतूल में 24 एम व्ही ए आर के,132 केवी सब स्टेशन चिचोली में 24 एम व्ही ए आर,132 केवी सबस्टेशन गुडगाँव में 12 एम व्ही ए आर, 132 के व्ही सबस्टेशन मुलताई में 21 एम व्ही ए आर, 132 केवी सबस्टेशन बिसनूर मे 12 एम व्ही ए आर तथा 132 के व्ही सबस्टेशन आमला मे 24 एम व्ही ए आर, कैपेसिटर बैंक स्थापित है। इस प्रकार बैतूल जिले में 8 सब स्टेशनों में 141 एमव्हीआरए क्षमता के कुल 13 कैपेसिटर बैंक क्रियाशील है।

क्यों जरूरी है कैपेसिटर बैंक

सबस्टेशनों से विद्युत आपूर्ति के दौरान अक्सर पावर ट्रांसफार्मर्स पर इंडक्टिव लोड बढ़ जाता है, जिससे वोल्टेज में गिरावट आती है और बिजली की गुणवत्ता प्रभावित होती है। कैपेसिटर बैंक अपने कैपेसिटिव लोड के माध्यम से इस प्रभाव को संतुलित करते हैं। इससे पावर फैक्टर में सुधार होता है और उपभोक्ताओं को मानक वोल्टेज पर विश्वसनीय एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

प्रदेश में कुल 751 कैपेसिटर बैंक

एम.पी. ट्रांसको के मुख्य अभियंता श्री अमर कीर्ति सक्सेना ने बताया कि प्रदेश स्तर पर एमपी ट्रांसको के कुल 751 कैपेसिटर बैंक सक्रिय हैं। इनमें 220 के.व्ही. सबस्टेशनों पर 145 के.व्ही. स्तर के 32 कैपेसिटर बैंक तथा 132 के.व्ही. सबस्टेशनों पर 36 के.व्ही. स्तर के 719 कैपेसिटर बैंक शामिल हैं। इनकी संयुक्त स्थापित क्षमता 9278.5 एम.व्ही.ए.आर. है, जिसके माध्यम से उपभोक्ताओं को स्थिर और गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

धीरेंद्र शास्त्री से मिलवाने की आड़ में महिला से ठगी

आपत्तिजनक वीडियो बनाकर ब्लैकमेल कर रहा था आरोपी

भोपाल। छतरपुर जिले में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र शास्त्री से मुलाकात कराने का झांसा देकर एक महिला से ढाई लाख रुपये ठगने, दुष्कर्म करने और फिर ब्लैकमेल करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी महेंद्र दुबे के खिलाफ दो अलग-अलग थानों में केस दर्ज कर लिया है और उसकी तलाश में जुटी है। पीड़िता, जो 27 साल की है, ने आरोप लगाया है कि महेंद्र दुबे, जो खुद को बागेश्वर धाम का सक्रिय शिष्य बताता था, ने उसे धीरेंद्र शास्त्री से मिलवाने का झूठा भरोसा दिया। आरोपी ने महिला से ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके से करीब ढाई लाख रुपये ऐंठ लिए। महेंद्र ने पीड़िता को शादी का भी वादा किया था और इसी के चलते महिला उसके जाल में फंस गई। आरोपी ने पीड़िता के साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। इस दौरान उसने चुपके से आपत्तिजनक वीडियो भी रिकॉर्ड कर लिए। बाद में, इन्हीं वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर महेंद्र महिला को ब्लैकमेल करता रहा और लगातार पैसे वसूलता रहा। पीड़िता ने बताया कि शनिवार देर रात महेंद्र ने उसे बड़े बगराजन क्षेत्र में बुलाया। वहां उसने वीडियो डिलीट करने की बात कही। जब महिला वहां पहुंची, तो महेंद्र ने उसके साथ गाली-गलौज की, उसे जमीन पर पटक दिया और मारपीट की। इस दौरान उसने महिला का मोबाइल फोन, गले की चेन और कान की बाली भी छीन ली। इस घटना के बाद, महिला ने पहले सिटी कोतवाली थाने में मारपीट और धमकी की शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद, सोमवार को वह सिविल लाइन थाना पहुंची और वहां दुष्कर्म और ब्लैकमेलिंग की शिकायत दर्ज कराई। सिविल लाइन थाना प्रभारी सतीश सिंह ने बताया कि महिला की रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म, मारपीट और धमकी सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज किया गया है।

युवती ने लिवइन पार्टनर पर दर्ज कराई रेप की एफआईआर

एक साल से युवक के साथ रह रही थी, आरोपी ने शादी करने का झांसा दिया था

भोपाल। भोपाल के बागसेवनिया इलाके में रहने वाले बैंक कर्मचारी के खिलाफ उसकी लिव इन पार्टनर ने रेप का केस दर्ज कराया है। दोनों बीते एक साल से साथ रह रहे थे। इस दौरान आरोपी ने जल्द शादी का झांसा देकर पीड़िता के साथ कई बार रेप किया। अब आरोपी ने शादी करने से साफ इनकार कर दिया है। तब पीड़िता ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। सब इंस्पेक्टर शिरोमणि सिंह के मुताबिक 28 वर्षीय युवती प्राइवेट जॉब करती है और मूल रूप

से जबलपुर की रहने वाली है। एक साल पहले उसकी पहचान एक निजी बैंक में काम करने वाले मुकेश मिश्रा से हुई थी। पहले दोनों के बीच फोन पर बातचीत हुई और मामला प्रेम प्रसंग तक पहुंच गया। इतना ही नहीं बाद में दोनों भोपाल के दानिश नगर में लिव इन रिलेशनशिप में साथ रहने लगे। इस दौरान आरोपी युवक ने उसके साथ लगातार रेप किया। कुछ दिन पहले आरोपी युवक ने उससे बातचीत करना बंद कर दी और शादी करने से इनकार कर दिया। इसके बाद उसने जबलपुर में जीरो पर केस दर्ज कराया। जहां से केस डायरी मिलने पर बागसेवनिया पुलिस ने एफआईआर दर्ज की। हालांकि पुलिस ने अभी तक आरोपी युवक को गिरफ्तार नहीं किया है। उसकी तलाश की जा रही है।

शिमला जैसा ठंडा भोपाल मसूरी से ज्यादा सर्द इंदौर

प्रदेश के 14 जिलों में सीवियर कोल्ड वेव का अलर्ट

एमपी में जम्मू-हिमाचल की बर्फबारी का पड़ रहा असर

भोपाल। मध्यप्रदेश के पूर्वी हिस्से यानी, जबलपुर, सागर, रीवा और शहडोल संभाग के जिलों में अब ठंड असर दिखाने लगी है। पूर्वी हिस्से में सीजन में पहली बार कई शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे चला गया। सोमवार-मंगलवार की रात जबलपुर में सीजन की सबसे सर्द रात दर्ज की गई। यहां तापमान 9.7 डिग्री रहा। राजगढ़ प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। मंगलवार को भोपाल, इंदौर समेत 14 जिलों में कोल्ड वेव का अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार, पहाड़ी राज्य जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बर्फबारी हो रही है। इसका असर मध्य प्रदेश में भी है। खासकर प्रदेश का उत्तरी हिस्सा ठिठुर रहा है। इस कारण नवंबर में ही पारा रिकॉर्ड लुढ़का है। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया- एमपी के उत्तरी हिस्से में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) सक्रिय है। इस वजह से उत्तरी हवाएं मध्य प्रदेश में आ रही हैं। इस वजह से ठंड का असर बढ़ा है। मंगलवार को भोपाल, इंदौर और राजगढ़ में तीव्र शीतलहर और शाजापुर, सीहोर, देवास, बैतूल, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, मंडला, रीवा, मऊगंज, मैहर, शहडोल में शीतलहर चलेगी। वहीं, बालाघाट में भी पारे में खासी गिरावट देखने को मिलेगी। रविवार को बड़े शहरों में भोपाल में तापमान 8.8 डिग्री, इंदौर में 7.9 डिग्री, ग्वालियर में 10.5 डिग्री, उज्जैन में 11 डिग्री और जबलपुर में पारा 10.2 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के अनुसार, रविवार-सोमवार की रात में ही शिमला में पारा 8.8 डिग्री दर्ज किया गया। यानी, जितना शिमला में रात का तापमान था, उतना भोपाल में भी रहा। वहीं, इंदौर में पारा 7.9 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। इस हिसाब से देहरादून (11.7 डिग्री), मसूरी (8.6 डिग्री) और शिमला (8.8 डिग्री) इंदौर से पीछे रहे।

इस बार ज्यादा दिन तक पड़ेगी तेज सर्दी

मौसम विशेषज्ञ पीके शाह ने बताया- पहाड़ों की बर्फबारी का असर मध्य प्रदेश में देखने को मिल रहा है। इस वजह से ही पारे में खासी गिरावट हुई है। आमतौर पर प्रदेश में तेज सर्दी का असर नवंबर के दूसरे पखवाड़े से शुरू होता है, जो जनवरी के आखिरी तक रहता है, लेकिन इस बार हिमालय क्षेत्र में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक सप्ताह पहले ही एक्टिव हो गए। इस वजह से नवंबर के दूसरे सप्ताह से ही कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो गया। यदि वेस्टर्न डिस्टरबेंस ऐसे ही एक्टिव रहते हैं तो प्रदेश में तेज सर्दी 75 दिन की बजाय 80 से 85 दिन तक रह सकती है। नवंबर के दूसरे ही सप्ताह में कड़ाके की ठंड से कई शहरों में रिकॉर्ड टूट गए हैं। राजधानी भोपाल में नवंबर का पिछले 10 साल का रिकॉर्ड टूट गया। यहां न्यूनतम तापमान 8 डिग्री पहुंच चुका है, जो साल 2015 के बाद सबसे कम है। इंदौर में पारा 7 डिग्री तक जा चुका है। इंदौर में पिछले 25 साल में नवंबर में इतनी सर्दी कभी नहीं पड़ी। यहां नवंबर की ठंड का ओवरऑल रिकॉर्ड 1938 का है, जब पारा 5.6 डिग्री पर पहुंचा था। रात के अलावा दिन में भी ठंडक घुलने लगी है। सोमवार को ज्यादातर शहरों में पारा 28 डिग्री सेल्सियस से नीचे ही रहा। मौसम विशेषज्ञ शाह ने बताया कि दिन में धूप निकलने से पारा बढ़ा है। धूप न निकलने की स्थिति में दिन के तापमान में भी गिरावट दर्ज हो सकती है। प्रदेश में नवंबर में पिछले 10 साल से ठंड के साथ बारिश का ट्रेंड भी है। इस बार भी ऐसा ही मौसम रहेगा। वहीं, बारिश के लिहाज से अक्टूबर का महीना उम्मीदों पर खरा उतरा है। औसत 2.8 इंच पानी गिर गया, जो सामान्य 1.3 इंच से 121त्न ज्यादा है। भोपाल में 30 अक्टूबर को दिन का तापमान 24 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के रिकॉर्ड के अनुसार, पिछले 25 साल में अक्टूबर का यह सबसे ठंडा दिन था। उज्जैन, छतरपुर, नरसिंहपुर समेत कई शहरों में पारा 24 डिग्री के नीचे ही रहा। मौसम विभाग ने अनुमान लगाया था कि नवंबर के दूसरे सप्ताह में ठंड का असर बढ़ेगा। हुआ भी वैसा ही। पारे में खासी गिरावट देखने को मिल रही है। खासकर ग्वालियर-चंबल संभाग के जिलों में, जहां उत्तरी हवाएं सीधी आती हैं, वहां तापमान लुढ़केगा।

भोपाल के स्वर्ण जयंती पार्क में पेड़ से लटका मिला अज्ञात युवक का शव

भोपाल। राजधानी भोपाल के स्वर्ण जयंती पार्क में सोमवार सुबह उस वक्त सनसनी फैल गई जब स्थानीय लोगों ने एक अज्ञात युवक का शव पेड़ से लटका हुआ देखा। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने इसे फांसी लगाकर आत्महत्या का मामला बताया है, हालांकि मृतक की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार, सुबह पार्क में टहलने आए कुछ नागरिकों ने पेड़ पर लटके शव को देखा और तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं किया है।

थाना प्रभारी ने बताया कि मृतक की पहचान कर उसके परिजनों को सूचित करने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है ताकि घटना के संबंध में और सुराग मिल सकें।

राज्यपाल ने देखा गुजरात का बिरसा मुंडा जनजातीय विश्वविद्यालय

राजपीपला का किया भ्रमण, भगवान बिरसा मुंडा को किया नमन, छात्रावास पहुंचे

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल मंगलवार को गुजरात के नर्मदा जिले के राजपीपला के भगवान बिरसा मुंडा विश्वविद्यालय पहुंचे। उन्होंने परिसर स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक डॉ. दर्शना बेन वसावा भी मौजूद थी। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि बिरसा मुंडा विश्वविद्यालय की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन की संकल्पना है। उन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रावास का निरीक्षण किया। विद्यार्थियों की आवास व्यवस्थाओं की समीक्षा की। विश्वविद्यालय के स्वरूप और विकास के विषय में विश्वविद्यालय प्रबंधन से चर्चा की। राज्यपाल श्री पटेल ने विश्वविद्यालय परिसर में 'एक पेड़- मां के नाम' अभियान के तहत पौध-रोपण किया। राज्यपाल के आगमन पर उनका पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया। राज्यपाल श्री पटेल को विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मधुकर पाडवी ने बताया कि विश्वविद्यालय जनजातीय कला, विरासत, संस्कृति, औषधीय प्रणालियों, भाषा और साहित्य का संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए समर्पित है। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा के माध्यम से जनजातीय समुदायों की परंपराएँ

और ज्ञान प्रणाली, व्यापक सामाजिक पुनर्जागरण में योगदान दें सके। कुलपति डॉ. पाडवी ने बताया कि विश्वविद्यालय विभिन्न विषयों जैसे मानविकी, वाणिज्य, विज्ञान, कानून, शिक्षा, आदिवासी पारंपरिक कला, शिल्प और कौशल आधारित शिक्षा में स्नातक से लेकर स्नातकोत्तर, व्यावसायिक और पी.एच.डी. तक के शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है। बिरसा मुंडा जनजातीय विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2017 मे हुई थी। इसका उद्देश्य विशेष रूप से गुजरात और विकासशील क्षेत्रों की जनजातीय आबादी के संदर्भ में परिवर्तनकारी और नवीन शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रम विकसित करना है। विश्वविद्यालय की स्थापना जनजातीय क्षेत्रों के तीव्र विकास को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी, कौशल-आधारित, व्यावसायिक, प्रबंधन, पर्यटन, जनजातीय कला, संस्कृति और पारंपरिक मूल्य प्रणालियों और अन्य संबंधित क्षेत्रों में शैक्षिक अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है। विश्वविद्यालय में जनजातीय कला, संस्कृति, परंपरा, भाषा, औषधीय प्रथाओं, रीति-रिवाजों, वन-आधारित आर्थिक गतिविधियों, वनस्पतियों, जीवों, और जनजातीय क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित ज्ञान और प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए शिक्षण और अनुसंधान सुविधाएं उपलब्ध है।

भोपाल में लोडिंग ऑटो ने महिला को मारी टक्कर, मौत

बेटा बोला-काम पर जा रही थीं मां, आरोपी चालक वाहन छोड़कर फरार

भोपाल। भोपाल के लालघाटी में लोडिंग ऑटो की टक्कर से महिला की मौत हो गई। घटना मंगलवार सुबह 9 बजे की है। महिला काम पर जाने के लिए घर से निकली थी। हादसे के बाद आरोपी ऑटो को छोड़कर मौके से फरार हो गया। कोहेफिजा पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक मुन्नी बाई वर्मा (50) नयापुरा लालघाटी में रहती थीं। वह विजय नगर में स्थित एक बंगले में काम करती थीं। सुबह करीब नौ बजे काम पर जाने के लिए पैदल घर से निकली थीं। लालघाटी चौराहा पर सड़क पार करते समय लोडिंग वाहन ने उन्हें सामने से टक्कर मार दी। हादसे के बाद आरोपी चालक मौके पर वाहन को छोड़कर फरार हो गया। राहगीरों ने महिला को इलाज के लिए हमीदिया अस्पताल पहुंचाया। जहां उपचार के दौरान कुछ ही देर में उनकी मौत हो गई। मृतका के बेटे सुमित वर्मा ने बताया कि हमें घटना की जानकारी नहीं थी। पुलिस ने हादसे की सूचना दी। तब अस्पताल आए, यहां मां की मौत की खबर मिली। पुलिस ने ही बताया कि मां को एक लोडिंग ऑटो ने टक्कर मारी है। पुलिस ने इस ऑटो को जब्त कर थाने में खड़ा कर लिया है। वहीं, पुलिस का कहना है कि आरोपी की चालक की तलाश की जा रही है। घटना स्थल के आस पास लगे सीसीटीवी कैमरों के फटेज खंगाल रहे हैं।

सरकार करेगी परिक्रमा वासियों का डेटा अपडेट, रास्ते में होगी आसानी

एमपी में हर नर्मदा परिक्रमावासी को मिलेगा प्रमाणपत्र

भोपाल। प्रदेश में अब हर नर्मदा परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं की जानकारी सरकार के पास होगी। इसके लिए राज्य सरकार ने नर्मदा नदी और नर्मदा परिक्रमा मार्ग से जुड़े जिलों की ग्राम पंचायतों को आदेश दिए हैं कि वे परिक्रमावासियों को प्रमाण पत्र जारी करें। इसके जरिए सरकार को हर साल नर्मदा परिक्रमा करने वालों की जानकारी भी मिलेगी। सरकार ने पंचायतों से कहा है कि वे परिक्रमावासियों की समस्याओं का समाधान करने में मदद करें। पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग ने जनपद पंचायतों से 31 अक्टूबर तक जारी किए गए प्रमाण पत्रों की जानकारी तलब की है। प्रदेश में नर्मदा नदी को मां नर्मदा के रूप में पूजा जाता है। हर साल कई श्रद्धालु अमरकंटक से लेकर अरब सागर और फिर वापस अमरकंटक तक नर्मदा की परिक्रमा करते हैं। अब प्रमाण पत्र होने से ग्रामीण इलाकों में पक्रिमा करते समय परिक्रमावासियों को पहचान दिखाने में आसानी होगी। प्रमाण पत्र लेने वाले परिक्रमावासियों के खिलाफ कोई आपराधिक मामला नहीं होना चाहिए। परिक्रमावासियों को ग्राम पंचायत को आवेदन देना होगा, जिसमें दो फोटो और एक पहचान पत्र लगाना होगा। आवेदन मिलने पर ग्राम पंचायत तय फॉर्मेट में प्रमाण पत्र जारी करेगी। ग्राम पंचायत को परिक्रमावासियों के लिए एक रजिस्टर बनाना होगा। प्रमाण पत्र दिखाकर परिक्रमावासी नर्मदा परिक्रमा के दौरान किसी भी गांव में आसानी से प्रवेश कर सकेंगे। स्थानीय पुलिस और प्रशासन भी इस प्रमाण पत्र को परिक्रमावासी की पहचान के रूप में मानेंगे। सभी ग्राम पंचायतें भविष्य में इसी आधार पर कार्य करेंगी। अब तक जारी किए गए प्रमाण पत्रों की जानकारी पंचायतें 15 दिन के भीतर संचालनालय को भेजेंगी। इस निर्णय से नर्मदा परिक्रमा वासियों को पहचान के लिए दस्तावेज की कमी से होने वाली परेशानियों से बचाया जा सकेगा और उनकी यात्रा आसान होगी।

बिहार की तर्ज पर प्रदेश में होगी मखाना की खेती

मंत्री कुशवाह ने कहा-किसानों को किया जाएगा प्रोत्साहित

भोपाल। उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि मध्यप्रदेश में भी बिहार की तर्ज पर मखाना की खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रदेश के 4 जिलों नर्मदापुरम, बालाघाट, छिंदवाड़ा और सिवनी में मखाना खेती क्षेत्र विस्तार को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में प्रारंभ किया जा रहा है। मंत्री श्री कुशवाह ने इन जिलों के किसानों को योजना से जुड़ने की अपील की है। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि मखाने का उत्पादन भी सिंघाड़ा की तरह छोटे-छोटे तालाबों में किया जाता है। बिहार में मखाना उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है मखाने के बीज को फल का स्वरूप प्रदान करने के लिए छोटी-छोटी उत्पादन ईकाइयाँ भी लगाई जाती है, मखाने की भारत सहित अरब और यूरोप के देशों में काफी मांग रहती है। उल्लेखनीय है कि मखाना उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार द्वारा मखाना बोर्ड का गठन भी किया गया है। मध्यप्रदेश की जलवायु भी मखाना के उत्पादन के लिए अनुकूल है। इसलिए प्रदेश के किसानों को इस ओर आकर्षित करने की आवश्यकता है। आयुक्त उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्री अरविन्द दुबे ने बताया कि प्रदेश के 4 जिलों नर्मदापुरम, बालाघाट, छिंदवाड़ा एवं सिवनी जिले में 150 हैक्टेयर क्षेत्र में विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। इस पर 45 लाख रूपये खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। मखाना उत्पादन करने वाले कृषकों को 75 हजार प्रति हैक्टेयर या लागत का 40 प्रतिशत अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि योजना के तहत प्रदेश के 99 कृषकों ने ऑनलाइन आवदेन किया जा चुका है।